ڈاکخانہ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रीः

निर्भयबिलास

अथवा

गीतगोविन्द,

निर्भयराम कृत.

भगवत भक्तों के हितार्थ लाला फकीरचंद,
जोहरी ने छपवाया.

देहली:

रसिक काशी प्रेस में बाबू रामचंद्र के प्रबंध से छपा।

१८९१.

तादाद जिल्द १०००   कीम

क

ॐनमो नारायणाय: ॥

हे सच्चिदानंद परमात्मा, हे जगदीश्वर जगत आत्मा, हे अंतरयामी मायापते, हे बिश्वंभर कल्यान मूर्तें आपकी महिमा अनंत है। शेष गणेश की गम नहीं मेरी क्या सामर्थ है ॥ हां इतना जानता हूं जो कुछ ये सर्ब है सब आपका बिलास है देशकाल शब्द अर्थ को चेतन करनेहारा आपही का प्रकाश है आपके गुणानुबाद और मेरा लौकिक जीवन दोनो आशचर्ज रूप हैं उनका पार नहीं और इसका एतबार नहीं हे गोविन्द मैं जैसा तैसा हूं सब प्रकार आपका हूं वोह बावले हैं जो अन्य अभिमान करते हैं नाम रूप पर मरते हैं निर्भय पद को छोड भूलकर डरते हैं ॥

हरी ओम् शांति शांति शांति ॥

भूमिका

निगम जो बृहदारनाक आदि उपनिशद भाग है और शास्त्र जो वेदांत योग दर्शनआदिक हैं तथापुरान जो महाभारत भागवत आदिक हैं तिन में जो बियास आदिक मुनियों ने गुह्यरहस्य कथन किया है तहां से जैसे भ्रमर पुष्पों से सुगंद को ग्रहण करे हैं तैसे ही मैने सार अर्थ को चुनकर निज मति के अनुसार कवित्त भजन इत्यादिक में कथन करके प्रघट किया है जो शेर मिसरा तुरट ठेक पुराने कबियों की बानी से लेकर लिखे हैं वह चोरी की नियत से नहीं बलकि अपनी जड कबिता में जान डाली है ॥

लाला फकीरचंद जोहरी ने अपनी बिमल प्रे और यथा योग पुर्शार्थ से ग्रंथका यह प्रथम भाग छपवाया द्वितीय आरंभ होने वाला है ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ निर्भयविलास

। अर्थात् ।

॥ गीतगोविन्द ॥

प्रारम्भः ।

हरिॐतत्सत् ।

॥ पद ॥

गणपति राखलो प्रण मेरा ।
थोड़ा जीवन भूल घनेरी, कैसें होय निवेरा ॥
गणपति राखलो प्रण मेरा ।
हठधर्म्मी मन मानत नाहीं, समझाया सौबेरा ॥
गणपति राखलो प्रण मेरा ।
महिमा अमित मोरि मति थोरी, प्रभू भरोसा तेरा ॥

गणपति राखलो प्रण मेरा ।
मंगल हो निर्भय बल बाढै, दो बरदान सवेरा ॥
गणपति राखलो प्रण मेरा ।

॥ कवित्त ॥

पूजन में आदि औ स्वरूपसों अनादि हो बल में अगाधि बल प्रत्यक्ष हो परेशको । भक्तको बरदान दो संत को कल्याण दो पौरष और मान दो शेष को सुरेशको ॥ संशयको दूर करो विद्या भरपूर करो ज्ञानमें चूर करो हरो रागद्वेष को । विघ्नन् को नाश करो अंतर में बास करो निर्भय प्रकाश करो लाडलो महेशको ॥

॥ पद ॥

राखो पत सरस्वती भवानी ।
बुद्धीबल अनुभव बलनाहीं, अगम अपार बखानी ॥
राखो पत सरस्वती भवानी ।
चुप होरहूं रहा नहींजाता, कथन योग नहीं बानी ॥
राखो पत सरस्वती भवानी ।
निकसतनाहीं चुभीकसकतहै, गहरी फांस फसानी ॥
राखो पत सरस्वती भवानी ।
निर्भय ध्यान टरे नहीं टारो, दर्शन दो महारानी ॥

राखो पत सरस्वती भवानी ।

॥ कवित्त ॥

रूप में लुभानी हो विद्या में सयानी हो त्रिभुवन समानी अखिल विश्व अभिमानी हो । सर्ग में जानी हो प्रलय में छिपानी हो वृद्धी हो न हानी हो स्वयं प्रमानी हो ॥ अनुभव की खानी हो सुख की निशानी हो मनसा की दानी जोति जगमग जगानी हो । हरि हर विधिमानी हो बेदन बखानी हो शुद्ध करो बानी मेरी सरस्वती भवानी हो ॥

॥ पद ॥

कृपासिंधु गुरुदेव दया करो शरण तुह्मारी आयो मैं ।
आगम निगम सभी पढ़हारो, जगको है मैं कौन विचारो, संशय टारो नाथ उभारो, अजहूं पार न पायो मैं ॥
कृपासिंधु गुरुदेव दया करो शरण तुह्मारी आयोमें ।
निर्भय नाम रूप जो जानो, माया का कारज पहचानो, माया का है कौन ठिकानो, तासों भेट न लायो मैं ॥
कृपासिंधु गुरुदेव दया करो शरण तुह्मारी आयोमैं ।

॥ कवित्त ॥

आपहू को ब्रह्म और विश्वहू को ब्रह्म लख्यो स-

च्चित् आनंद घन ब्रह्म को विचारके । द्वैत भ्रम ज्ञान नसाय दियो मूलतें मिथ्या नाम रूपकी कल्पना विडारके ॥ बाद और बिवाद जारो मान अपमान टारो काम क्रोध लोभ मोह भागे आप हारके । साक्षी हो कैसे नाहीं हीये से प्रनाम करूं निर्भय गुरुदेव को दृगन्न सें निहारके ॥

॥ कवित्त ॥

बूडत भवसागर तें काढ़ लियो बांह थांभ दीनबंधु दीनानाथ धीरज बंधायो है । संशय बिसरानो पद ज्यौंकात्यौं जानो चहूंओर दरसानो क्या अर्थ समझायो है ॥ निश्चय बिश्वास दियो जीवतें ब्रह्म कियो बन्ध और मोक्ष का झगड़ा छुड़ायो है । अहो गुरुदेव जबतें निर्भय स्वरूपतें ज्ञान के पियाले में हरि रस पिलायो है ॥

॥ पद ॥

मोहि नीको लागो पावन ज्ञान तुह्मारो ।

अगम अपार भवसागर थाह न आवे हाथ, छोर हू न सूझे ऐसो अँधियारो मोह रात, निरख तरंग चहूं ओर जीया घबरात, नैया ना खिवैया धीरहू न छोड़

दियो साथ, निर्भय बूड़ततें उभारो ॥
मोहि नीको लागो पावन ज्ञान तुह्मारो ।

॥ कवित्त ॥

ईशन के ईशहो देवन के देवहो कारण के कारण हो पतिन के पतीहो । रूपहै न रेखहै नामहै न धाम है शून्यहो न कामहै स्वयं परमगती हो ॥ अचल हो अखंड हो सच्चित् आनन्द हो साक्षीहो ब्रह्महो अचिंत्य अमितमती हो । नेरेहो न दूरहो सबमें भरपूर हो रूपसों भोग करो स्वरूपसों जतीहो ॥

॥ कवित्त ॥

आदहै न अंतहो अगम अपार अनंतहो पावन असंग हो अलख अप्रमान हो । एकहो प्रकाश हो पूर्ण महाकाश हो निर्गुण निरंजन हो चिदानंद ज्ञान हो ॥ अक्षर निराकार हो अव्यय निर्विकार हो निर्मल निराधार हो पुरुष पुराण हो । नित्यहो अजर हो अविनाशी हो अमर हो अव्यक्त निर्विकल्प हो अवाच्य निर्वाण हो ॥ सूक्षम स्थूल हो मूल फल फूल हो आत्मा हो देह हो इन्द्रियाँ मन प्राण हो । विश्व हो कर्त्तार हो शब्द ॐकार हो वेदहो अर्थहो ऐश्वर्य्य हो

भगवान हो ॥ रूप की खान हो सर्व गुण निधान हो अणूसे अणू हो महान से महान हो । देशहो कालहो सुंदर विकाल हो शान्त क्षोभवान हो निर्भय हो बलवान हो ॥

॥ पद ॥

गोविन्दा तेरी करुणा के बलजाऊं ।
सेवा तो कछु बन नहीं आवे और हरीदास कहाऊं ॥
गोविन्दा तेरी करुणा के बलजाऊं ।
मानुष तन उत्तम कुल दीनो तापर नाहीं लजाऊं ॥
गोविन्दा तेरी करुणा के बलजाऊं ।
दीनानाथ मोहि यही वर दीजो तेराही गुण गाऊं ॥
गोविन्दा तेरी करुणा के बलजाऊं ।
जीवत ही निर्भय सुख होवे अन्त परम पद पाऊं ॥
गोविन्दा तेरी करुणा के बलजाऊं ।

॥ पद ॥

अहोनाथ बिनती सुनोमोरी हाहाकरूं कहत करजोरी ।
अबतो याही ज्ञान विचारा, निश दिन होवे ध्यान तुह्मारा, मिटजाये अभिमान हमारा, ऐसी बुद्धि करो प्रभु मोरी ॥ अहो नाथ बिनती सुन मोरी० ।

भाव तिहारा अचल अखंडा, अगम अपार सत्‌चित्‌ आनन्दा, कैसे जाना जाय गोविंदा, महिमा अमित मोरि मति भोरी ॥ अहो नाथ विनती सुन मोरी० । निर्बल परबस निपट भिखारी, अल्प तुच्छ है शक्ति हमारी, तुह्मरी कृपासों लखूं मुरारी, अलख अरूप परमगति तोरी ॥ अहो नाथ बिनती सुन मोरी० । तुह्मरी गतीहो धाम तुह्मारा, निर्भय कछु मांगत नहिं न्यारा, पूर्ण करो यह काज हमारा, अन्तर्जामी नवलकिशोरी ॥ अहो नाथ बिनती सुन मोरी० ।

॥ पद ॥

मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ।

विती भर जमीन नाहीं, वस्त्र में कोपीन नाहीं, महा कंगाल नाहीं, कौड़ी को सहारो ॥

मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ।

मित्र कलित्र तात मात, दारा सुत भगनी भ्रात, सब ने छोड़दियो साथ, कोई ना हमारो ॥

मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ।

बल कर गती नाहीं, विद्या हीन मति नाहीं, होनहार प्रवल योंहीं, होतहै गुजारो ॥

मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ।

धर्म्म कर्म्म बनत नाहीं, भक्तिभाव सधत नाहीं, निश्चय कछु परत नाहीं, सोचसोच हारो॥

मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो।

अक्षर का ज्ञान हो, अर्थ का ध्यान हो, निर्भय निर्बाण हो, भेद बुद्धि टारो॥

मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो।

॥ पद ॥

निश्चय एक राम जान दूसरा न कोई।

आपही आप बाग़ बना, आपी आप बेल हुवा, आप ही बेल सींचत है, आपी बेल बोई॥

निश्चय एक राम जान दूसरा न कोई।

लागत फल फूल पात, खिल खिल कुमलात जात, निर्भय राम इच्छासों, होनी होसो होई॥

निश्चय एक राम जान दूसरा न कोई।

॥ पद ॥

साईं तन ढूंढा नाहीं काहेका फ़क़ीर।

जटा जूट करे तिलक लगावे, भस्मी रमावे है शरीर॥

साईं तन ढूंढा नाहीं काहेका फ़क़ीर।

बांचे वेद भागवत गीता, मूंड मुंडाये रङ्गे चीर॥

साईं तन ढूंढा नाहीं काहेका फ़क़ीर।
पढ़ें नमाज़ नित रोजे राखे, हो मुरीद चाहे पीर॥
साईं तन ढूंढा नाहीं काहेका फ़क़ीर।
निर्भय राम सांच ही मानो, कह गये योंहीं कबीर॥
साईं तन ढूंढा नाहीं काहेका फ़क़ीर।

॥ पद ॥

करोरे मन वादिन की तदबीर।
भूषण बसन द्रव्य घरबारा, यहीं रहे सब ठाठ गँवा-
रा, खाली लाद चले बनजारा, नेक धरे नहीं धीर॥
करोरे मन वादिन की तदबीर।
सुत बनितादि सकल परिवारा, किसका तू और कौन
तिहारा, जादिन बिछुरत हंस बिचारा, नैनन भरला-
ये नीर॥ करोरे मन वादिन की तदबीर।
इन्द्री कोई काम न आवे, सोच सोच मनमें घबरावे,
है कोई ऐसा प्राण बचावे, मृतक होत शरीर॥
करोरे मन वादिन की तदबीर।
निर्भय राम भूलमतजाना, मोह जाल लोभ है दाना,
यामें आकर जौन फसाना, जमपुर जात अखीर॥
करोरे मन वादिन की तदबीर।

—०—

॥ पद ॥

गोविन्दा न गाया तूने गाया क्यारे बावरे ।
भोगों में लुभाना फिरे, काकवत सयाना हुवा, राम रस न खाया तूने, खाया क्यारे बावरे ॥
गोविन्दा न गाया तूने गाया क्यारे बावरे ।
माया में लुभाना फिरे, बड़ो ही दिवाना हुवा, निर्भय पद न पाया तूने, पाया क्यारे बावरे ॥
गोविन्दा न गाया तूने गाया क्यारे बावरे ।

॥ पद ॥

बतादे तो मैं बोलत है सो कोहै ।
ब्रह्मा हरी महेश भवानी, पण्डित वैद्य ज्योतिषी ज्ञानी, जोगी जती ऋषि मुनि नाहीं, कौन सृष्टि में वोहै ॥
बतादे तो मैं बोलत है सो कोहै ।
अग्नि पवन जल आकाश माटी, तारागण रवि शशि दिन राती, इन्द्री देह प्राण मन नाहीं, अचरज यही बड़ो है ॥ बतादे तो मैं बोलत है सो कोहै ।
वैश्य बिरहमन कायथ क्षत्री, तगा शूद्र बिशनोई खत्री, सैय्यद शेख़ मुग़ल ईसाई, पठानना कम्बो है ॥
बतादे तो मैं बोलत है सो कोहै ।

सन्यासी ब्रह्मचारी हाजी, सूफ़ी पादरी मुल्लां काज़ी,
शत्रु मित्र सेवक ना स्वामी, खोटा नाहिं खरो है ॥
बतादे तो मैं बोलत है सो कोहै ।
कड़वा चर्परा खारी सीठा, निमका अलोना खट्टा मी-
ठा, लम्बा चौड़ा ऊंचा नीचा, मोटा नाहिं लटो है ॥
बतादे तो मैं बोलत है सो कोहै ।
रक्त श्वेत नारञ्जी पीला, काला हरा बैंजनी नीला,
करो नरम कुरूप रूप नहिं, तातोही ना सीरो है ॥
बतादे तो मैं बोलत है सो कोहै ।
आपही भूला पूछत डोले, आपहि मांह आपहि बोले,
रहे अचेत न चेते तौंलो, निर्भय ज्ञान न होहै ॥
बतादे तो मैं बोलत है सो कोहै ।

॥ पद ॥

अनुभव स्वरूप निज रूप लखा,
जिन सोहं शिवोहं रटा रटा ।
अक्षय धन निर्भय मिलजावे, तृष्णा कबहूं निकट न
आवे, कर संतोष बैठरहु घरमें, मत बाहर फिर उठा
उठा ॥ अनुभव स्वरूप निज रूप लखा,
जिन सोहं शिवोहं रटा रटा ।
जीवन मुक्त सुख जोतू चाहे, निर्भय और क्या जत-

न बताये, ब्रह्मानन्द से पूरण होजा, विषय आनंद को घटा घटा ॥ अनुभव स्वरूप निज रूप लखा,
जिन सोहं शिवोहं रटा रटा ।

शीतल हृदय शान्ति चित होई, वृथा कल्पना उठे न कोई, निर्भय अन्तर निर्मल करलो, जितने मलहैं सब छुटा छुटा ॥ अनुभव स्वरूप निज रूप लखा,
जिन सोहं शिवोहं रटा रटा ।

राग और द्वेष नष्ट होजावे, चहुंदिशि एकहि भाव दिखावे, निर्भय रहो निश्चय यही राखो, दृष्टि दृश्य से हटा हटा ॥ अनुभव स्वरूप निज रूप लखा,
जिन सोहं शिवोहं रटा रटा ।

नाम रूप गुण तें है न्यारो, सत्‌चित्‌ आनंद भाव हमारो, माखन माखन खालो निर्भय, छाड़चलो यहीं मठा मठा ॥ अनुभव स्वरूप निज रूप लखा,
जिन सोहं शिवोहं रटा रटा ।

॥ पद ॥

मनवाँ छाड़ो साथ हमारा ।

ना चहिये तेरा माल ख़ज़ाना ना नौबत नक्कारा, ना चहिये तेरी गद्दी तकिया ना तेरा घरबारा ॥
मनवाँ छाड़ो साथ हमारा ।

ना चहिये तेरी मान बड़ाई ना तेरा परिवारा, भ्राता मात पिता ना चहिये ना भगनी सुत दारा ॥

मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।

भवसागर के पार बसत थे सुखसों गहें किनारा, बांह पकड़ व्हांसे ले आयो छाड़ दियो मँजधारा ॥

मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।

आदि जन्मसैं आजतलक लौं कबहूं बचन न टारा, मैं नित रहा तुह्मारा होकर तू नहिं हुवा हमारा ॥

मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।

तेरा तौ नाहीं कछु बिगड़ा बना फिरे मतवारा, राग द्वेष का मिथ्या फांसा मेरे गले बिच डारा ॥

मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।

अपना रंग लाया पर लाया भूला क़ौल क़रारा, ना तुह्मरी परतीत रही कुछ ना तुह्मरी कछु सारा ॥

मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।

आवागमन में दुख नहिं माने पूरा ढीठ गवाँरा, स्वर्ग नर्क को भोग चुका है मूरख लाख न वारा ॥

मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।

इन्द्रिन बस होना नहिं अच्छा बरज बरज मैं हारा, जो कुछ पूंजी थी खो बैठा अब नहीं नेक सहारा ॥

मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।
लोभ मोह की झोली बांधी घर घर हाथ पसारा, गांठ में लाल खोल नहीं जाने मांगत फिरे उधारा॥
मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।
जा प्रपञ्च में सार नेक नहिं ताको सत्य विचारा, सत को असत जान किया त्यागन बृथा जन्म गुजारा॥
मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।
परमारथ जब लगि नहीं बनि है दुर्लभ है निस्तारा, तुझको तो स्वारथ से निशि दिन होत नहिं छुटकारा॥
मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।
जहाँ लग नाम रूप गुण निर्भय तहाँ लगि समझ बिकारा, आत्म देव अनुभव स्वरूप है पञ्चकोश तैं न्यारा॥ मनवाँ छाड़ो साथ हमारा।

॥ पद ॥

येह कैसी यारी कीनी हो साँवरे बिहारी।
घर छोड़े बन छोड़े डोलूं, मौन बुरा लागत क्या बोलूं, प्रेम गांठ लगी कैसे खोलूं, प्रबल मोहिनी डारी॥
येह कैसी यारी कीनी हो साँवरे बिहारी।
खान पान के रस सब त्यागे, भूषण बसन लगें विष पागे, सूनी सेज निरख डर लागे, विरहा अग्निकी मा-

री ॥ येह कैसी यारी कीनी हो साँवरे बिहारी । नैंनन तैं निशि दिन जल बरषै, देखन को जियरा अति तरसे, ऊधो जाय कहो तुम हरिसे, सुध क्यौं ना लेत हमारी ॥

येह कैसी यारी कीनी हो साँवरे बिहारी । ज्ञान को रंग ध्यान सें घोलो, अनुभव की पिचकारी लेलो, निर्भय स्याम से होरी खेलो, सन्मुख दे दे तारी ॥ येह कैसी यारी कीनी हो साँवरे बिहारी ।

॥ दोहा ॥

तीन अवस्था तीन गुण, पञ्च कोश त्रै देह ।
निर्भय इन तैं भिन्न तू, घट घट दृष्टा जेह ॥
वहि रंतर घन प्राज्ञको, समष्टि व्यष्टि अभिमान ।
निर्भय साक्षी भावमें, रंचक मात्र न जान ॥
अन्य दृष्टि सों भाव जो, परमारथ से नाहिं ।
सो स्वरूप ताको नहीं, निर्भय कहे दृढ़ाय ॥
नाम रूप अज्ञान के, जिमि असंग आकाश ।
जहाँ देखो निर्लेप है, निर्भय शुद्ध प्रकाश ॥
माया की चिंता बुरी, निर्भय कर सन्तोष ।
जा मारग चलना नहीं, क्यों गिनता है कोस ॥
श्रुति जाको आतम कहे, जीव कहे तेहिं ब्रह्म ।

निर्भय वो ब्रह्म आत्मा, तुही छाड़दे भ्रम ॥
उदासीन नित बर्तना, सुपनहु लाभ न हान।
स्थिर चित्त को अर्थ है, निर्भय पद निर्वान ॥
ब्रह्मानन्द प्रगटै नहीं, या विधि करत बिचार।
उत्तम अधिकारी नहीं, निर्भय कहै पुकार ॥

॥ सोरठा ॥

ऐसे शान्ति न होय, मध्यम अधिकारी गिनो।
करे उपासन सोय, शब्द ब्रह्म निज इष्ट कर ॥
अस दृढ़ लावै ध्यान, ज्यों चकोर चन्दा चितै।
करम करत नहिं हान, धुन अंतर छूटे नहीं ॥
रहे न कोऊ ताप, रूप अरूप दोउ भाव तब।
सूझें आपहि आप, भरम नसै निर्भय सकल ॥
या विधि चित्त न दृढ़ाय, अंतर मल पहिचानियों।
ताको करम उपाय, पुनि उपासना ज्ञान है ॥
चित्त शांति होजाय, अन्तर कुछ भासै नहीं।
त्रिपुटी भरम नसाय, आपहि आप निर्भय रहै ॥

॥ दोहा ॥

जब यह ध्याता ध्यान में, ध्येय रूप होजाय।
पूरा जानो ध्यान तब, यामें संशय नाहिं ॥

ध्येय रूप होना यही, भिन्न ज्ञान नहीं होय ।
क्षीर नीर जब मिलत हैं, सूझत नाहीं दोय ॥
कल जो करना आज कर, आज अभी यह सार ।
सारा दमभर की नहीं, निर्भय कहै पुकार ॥

॥ कवित्त ॥

जीव ब्रह्म ईश कौन बंध और मोक्ष कहा ऐसा विचार तू काहे नहीं करता है । क्योंतो तू आया फिर काहे को जात है कौन काम करना था चित्त नहीं धरता है ॥ सन्तन की माने नहीं ग्रन्थन को जाने नहीं अज्ञानी अभिमानी कामी अन्त को न डरता है । परमारथ कर हीन निर्भय स्वारथ में प्रवीन कैसा खाल की खलीती में मवाशी बना फिरता है ॥

॥ कवित्त ॥

कोई कहता है जप तप दान करो कोई तीरथ ब्रत सुकृति बतावे । कोई कहता है विद्या पढ़े अघ दूर हो मुख्य कोई भक्तीही दृढ़ावे ॥ वैराग्य बिवेक दिखात कोई अग्निहोत्र कोई हठ जोग करावे । तू सच्चिदानन्द है ब्रह्म स्वरूप ये निर्भय ज्ञान कोई न सुनावे ॥

॥ कवित्त ॥

धन सम्पत्ति पाये कहा सुत बनितादि चाहे कहा मित्रन् रिझाये कहा उत्तम कुल जायेतैं । बागहु लगाये कहा महल चिनवाये कहा चँमर ढुलवाये कहा छत्रहू धरायेतैं ॥ सेना बढ़ाये कहा शस्त्र मंगवाये कहा बलमें भुलाये कहा ऊधम उठायेतैं । तनको मंजाये कहा ऽस्तुति कराये कहा भांड बुलवाये कहा अप्सरा नचायेतैं ॥ भूषण घड़ाये कहा हस्ती बंधाये कहा नौबत झड़ाये कहा कीर्त्ती फैलायेतैं । नाना रस खाये कहा बस्त्रन सजाये कहा सुगंधी बसाये कहा पान को चबायेतैं ॥ रागहू गाये कहा साजहू बजाये कहा गुनी कहलाये कहा जोबन दिखलायेतैं । कीमियाँ बनाये कहा देशन मँझाये कहा वैद्य बन पुजाये कहा रत्न परखायेतैं ॥ सिरहू मुंडाये कहा केशहू रखाये कहा तिलकहू चढ़ाये कहा भस्मी रमायेतैं । बनी बन छाये कहा गुफामें समाये कहा आसन जमाये कहा देहको सुकायेतैं ॥ कानहू फड़ाये कहा चीरको रंगाये कहा पन्थहू चलाये कहा साधू कहलायेतैं । मौन हठ लाये कहा आँखैं झपकाये कहा कमन्डल हथियाये कहा दंडहू दबायेतैं ॥ कपट मन

माना है सत्त बिसराना है आपेको न जाना है अहं मम मचायेतैं ॥ बड़ोही दिवाना है दुःख में फसाना है कैसा लुभाना है अज्ञान में भुलायेतैं । निर्भय राम दाना है परम सयाना है केवल सुख जाना है हरी शरण आयेतैं ॥

॥ कवित्त ॥

होत है स्वाँस हू स्वाँस निरन्तर अजपा जाप टरे नहिं टारो । बाहर भीतर पूर रहा है आपही आप नहीं कछु न्यारो ॥ साक्षी राम है राम की सौगन्द भ्रम मिटो प्रगटो उंजियारो । दृष्टि अदृष्टि जो देखत राम को निर्भय राम हो देखन हारो ॥

॥ लावनी ॥

वेदों को पढ़ा सन्तों की सुना जुबानी ।
प्रभु की सेवा चतुर पदारथ दानी ॥

वृद्धी हो धर्म की विघ्न न होने पावे । ज्यूंका त्यूं भासे अर्थ काम बनजावे ॥ मानुष शरीर हो सुफल तत्व दर्सावे । ब्रह्मानंद प्रगटे आवागमन नसावे ॥

हो लाभ सदा कबहू नहीं होती हानी ।
प्रभू की सेवा चतुर पदारथ दानी ॥

निकसै विवेक वैराग्य की निर्मल धारा । मल दूर
होंय सव नेक न लागे वारा ॥ सन्तोष का पूरा पूरा
होय सहारा । बाढ़े प्रेम वल उपजै शुद्ध विचारा ॥
हिरदा होजाय दया शील की खानी ।
प्रभू की सेवा चतुर पदारथ दानी ॥
मिट जाय शोक दुख नासै संशय जाये । मङ्गल होवे
प्रकाश चहुं दिश छाये ॥ स्थित हो शांति क्षमा न-
म्रता आये । शत्रु में मित्र में भेद नहीं दिखलाये ॥
पण्डित होजाय ज्ञानी हो विज्ञानी ।
प्रभू की सेवा चतुर पदारथ दानी ॥
मिलजाय ख़ज़ाना रहे न इच्छा धन की । टल जाँय
रोग चिंता छुट जाये तनकी ॥ भय रहे न कोऊ निर्भ-
य दशा हो मनकी । धीरज ना टूटे चोट पड़े सौ घनकी ॥
बुद्धी निश्चय होजाय सत्य हो बानी ।
प्रभु की सेवा चतुर पदारथ दानी ॥

॥ लावनी ॥

सुबै शाम होता है फेरा यार तुह्मारे कूचे में ।
पूरा दिल को लगा आज़ार तुह्मारे कूचे में ॥
गर्म खूबिये हुस्नका है बाजार तुह्मारे कूचेमें ।
दुनियाँ का नहीं कोई ख़रीदार तुह्मारे कूचेमें ॥

नक्द जानो दिल देकर भी नहीं हार तुह्मारे कूचे में ।
जिन्स बेबहा का है ब्यौपार तुह्मारे कूचे में ॥
ईमान का सौदा है नहीं तकरार तुह्मारे कूचे में ।
पूरा दिल को लगा आज़ार तुह्मारे कूचे में ॥
लाखों यूसुफ़ फिरें जुलेख़ा वार तुह्मारे कूचे में ।
लाखों मजनूं लैलासी नार तुह्मारे कूचे में ॥
लाखों शीरी फ़रहाद सिफ्त बीमार तुह्मारे कूचे में ।
लाखों दमन हैं जाँसे बेज़ार तुह्मारे कूचे में ॥
लाखों हीर राँझेसी फिरे हैं ख्वार तुह्मारे कूचे में ।
पूरा दिल को लगा आज़ार तुह्मारे कूचे में ॥
सान पे लाखों जगें चढ़े तलवार तुह्मारे कूचे में ।
लाखों जगाँ पर गड़ी हैं दार तुह्मारे कूचे में ॥
कभी होवे इकरार कभी इनकार तुह्मारे कूचे में ।
बड़ा मज़ा है ग़ज़ब है मार तुह्मारे कूचे में ॥
ख़बरदार निकले है सदा हरबार तुह्मारे कूचे में ।
पूरा दिल को लगा आज़ार तुह्मारे कूचे में ॥
हरएक किसीका काम नहीं ज़िनहार तुह्मारे कूचे में ।
सिवाय इसके जो हो बेकार तुह्मारे कूचे में ॥
ख़फ़कानी बन जाता है हुशियार तुह्मारे कूचे में ।
पार हो कैसे नहीं है वार तुह्मारे कूचे में ।

निर्भयको भय नहीं रहा सरकार तुह्मारे कूचेमें ।
पूरा दिल को लगा आज़ार तुह्मारे कूचे में ॥

॥ होली ॥

होरी खेल न जानी खिलारी उमर योंहीं बीती सारी ।
फीको गुलाल रंग अति फीको मैल भरी पिचकारी,
रंग रंगीली मोरी पचरंग चूनर खेलत फाग बिगारी ।
ऐसो महा मूढ़ अनारी ॥
होरी खेल न जानी खिलारी उमर योंहीं बीती सारी ।
बाजत बीन मृदंग मुरलिया शङ्ख झाँझ डफ भारी,
मतिको हीन सुनत कछु नाहीं होत शब्द धुन प्यारी ।
सुरत नहीं जात संभारी ॥
होरी खेल न जानी खिलारी उमर योंहीं बीती सारी ।
नाचत नाच भाव बतलावत गावत तान दे तारी,
अन्तर छवि निरखै नहीं मूरख चेतन तत्व विचारी ।
फूली अद्भुत फुलवारी ॥
होरी खेल न जानी खिलारी उमर योंहीं बीती सारी ।
विषय भोग ही सेवत सेवत निर्मल बुद्धि बिसारी,
नाम अमीरस चाखत नाहीं देत नई नित गारी ।
कठिन निर्भय संसारी ॥
होरी खेल न जानी खिलारी उमर योंहीं बीती सारी ।

॥ होली ॥

पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।
सास नणद द्यौरनियाँ जिठनियाँ केतेही नाम धरोरी,
समझाये बरजे नहीं मानूं होनी होय सो होरी ।
मेरा मन हरि से लगोरी ॥

पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।
बगर परौसन संगकी सहेली कहो अब कैसी करूंरी,
बिन हरी फाग आगसो लगतहै तन मन जात जरोरी ।
प्राण नहीं मानत मोरी ॥

पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।
चलो सब मिलझुल चलें बिनतीकरें सीसनाय करजोरी,
मानेंतो मानै नहीं कर बाराजोरी पकड़े नवलकिशोरी ।
ऐसो कहा सब से बड़ोरी ॥

पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।
भक्ति की मांग प्रेम का सिंदूरा सत की मेंहदी रचोरी,
मन मनके कर माला करलो ज्ञानकी गाती कसोरी ।
ध्यान की ओट मिलोरी ॥

पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।
नथबेसर चूनर पहनाओ केसर रंग कर बोरी,
मलके गुलाल श्यामके मुखसों निर्भय कहो होरी होरी ।

तब ही जीवन है भलोरी ॥
पुरुषोत्तम संग खेलिये होरी ।

॥ पद ॥

मो सम कौन अधम अज्ञानी ।
हमहम के बस प्रभु नहिं हेरो, भयो देह अभिमानी ॥
मो सम कौन अधम अज्ञानी ।
सेवत विषय जोग विष लागत, उलटी फाँस फसानी ॥
मो सम कौन अधम अज्ञानी ।
धन धन करत उमर सब बीती, तृष्णा नाहीं अघानी ॥
मो सम कौन अधम अज्ञानी ।
लाख सुनी मानी नहीं एकहू, साधु सन्त की बानी ॥
मो सम कौन अधम अज्ञानी ।
आपेकी कछु सुध नहीं राखी, तकतक आस बिरानी ॥
मो सम कौन अधम अज्ञानी ।
निर्भय राम या पचरंग चादर, दिन दिन होत पुरानी ॥
मो सम कौन अधम अज्ञानी ।

॥ पद ॥

वा दिन की कछु सुध करो मन में, ।
जा दिन ले चलो ले चलो होय है ।

मैं मम तजि हरिनाम सुमरलो, वृथा स्वांस काहेको खोय है ॥　वा दिन की कछु सुध करो मनमें,
जा दिन लेचलो लेचलो होय है ।
रिपु संग प्रीति मित्र सों चोरी, मूरख बेल बिपर्यय बोय है ॥　वा दिन की कछु सुध करो मनमें,
जा दिन लेचलो लेचलो होय है ।
दुर्लभ है मानुष तन मिलनो, जाग जाग जाग क्या सोय है ॥　वा दिन की कछु सुध करो मनमें,
जा दिन लेचलो लेचलो होय है ।
निर्भय कही अब मानत नाहीं, अवसर बीत चलो फिर रोय है ॥　वा दिन की कछु सुध करो मनमें,
जा दिन लेचलो लेचलो होय है ।

॥ पद ॥

ज्ञान की बात बताऊं सजनी कहां गई चतुराई तोरी ।
तार तार भई नई चुनरिया अंग अंग कसकत है बोरी, इतना ऊधम कौन करत है साँच कहो साजन की चोरी ॥
ज्ञान की बात बताऊं सजनी कहां गई चतुराई तोरी ।
कहाँ से आई कहाँ जायगी कौन है तू क्यों जन्म लियोरी, क्या करना था क्या कर बैठी सोच नहीं

यही सोच बड़ोरी ॥
ज्ञान की बात बताऊं सजनी कहां गई चतुराई तोरी।
प्रानन की परतीत कहा है जाते बार न लागत गोरी, जब लग हंसा बोलत चालत तार न टूटे सोहं कोरी ॥
ज्ञान की बात बताऊं सजनी कहां गई चतुराई तोरी।
चाहे भली बुरी चाहे लागे माया का नहीं संग भलोरी, माया की बातों में आकर निर्भय ब्रह्म तैं जीव भयोरी ॥
ज्ञान की बात बताऊं सजनी कहां गई चतुराई तोरी।

॥ पद ॥

ऐसे ही जन्म समूह सिराए।
हम हम सों मम मम मम भजते, आतम रूप भुलाए ॥
ऐसे ही जन्म समूह सिराए।
हान लाभ मानत दुख खेवत, सत्संगत बिसराए ॥
ऐसे ही जन्म समूह सिराए।
वृथा ही हठ करते करते, सहज स्वभाव गँवाए ॥
ऐसे ही जन्म समूह सिराए।
निर्भय राम आपा नहीं चीह्नो, मरने के दिन आए ॥
ऐसे ही जन्म समूह सिराए।

॥ पद ॥

या नैंना वा रूप लुभाने।
धीरज लाज मोह ममतादिक आँखें लगे चुराने, ए
सखी श्याँमसुंदर स्वपने में जब तें मोहि दिखाने॥
या नैना वा रूप लुभाने।
तन मन धन नौछावर कीनो और कहा रहो जाने,
ए सखी काहू विधि नहीं रीझें ऐसे श्याँम सयाने॥
या नैंना वा रूप लुभाने।
अष्ट प्रहर रैन दिन क्षण पल निरखत नाहिं अघाने,
समझाये बरजे नाहिं माने ऐसे भये हैं दिवाने॥
या नैंना वा रूप लुभाने।
तुह्मरे करे कछु नहीं होय है निर्भय कहा भुलाने, नंद
नंदन करि हैं सोई होगा जिन के हाथ बिकाने॥
या नैंना वा रूप लुभाने।

॥ पद ॥

भरोसा जाको दूसरा हो सो करो।
कोई धन में कोई बल में भूला फिरत बड़ो, मेरा बल
धन राम नाम है छीजत नाहिं जरो॥
भरोसा जाको दूसरा हो सो करो।

कोई संयम साधे साधो कोई वेद पढ़ो, मोको तो एक राम नाम में सब कुछ सूझ पड़ो ॥

भरोसा जाको दूसरा हो सो करो।

कोई नाम में कोई रूप में मान अपमान करो, मेरा तो हां नाम रूप नहीं याही ज्ञान फरो ॥

भरोसा जाको दूसरा हो सो करो।

वर्णाश्रम कुल का अभिमानी कोई बना फिरो, निर्भय राम राम लौ लाओ माया मोह तरो ॥

भरोसा जाको दूसरा हो सो करो।

॥ ग़ज़ल ॥

मरजाऊं तमन्ना सुबह ओ श्याम यही है।
इस ज़ीस्त के आग़ज़ का अंजाम यही है ॥
सर काट के रख पेशे नज़र साक़ीये आलम।
पीने को मये वस्ल फ़क़त जाम यही है ॥
तक़दीर पे शाक़िर हो बखेड़ों से अलग हो ॥
दुनियाँ में अगर है तो बस आराम यही है ॥
सब इस्मों का मौसूम हूं सब सिफ्तों का मौसूफ़।
मेरा तो हक़ीक़त में बड़ा नाम यही है ॥
कुछ काम न हो ज़ीस्त के दिन यों हीं गुज़र जांय।
निर्भय तुझे करने को बड़ा काम यही है ॥

॥ ग़ज़ल ॥

चलें हैं ठहरो नहीं ज़ाहिदावज़ू बाक़ी। शराबे शौक़ का पीना है एक सबू बाक़ी ॥
हिसाब पाक हो झगड़ा न फिर को रख साक़ी। पिला दे आज ही जो कुछ रही है तू बाक़ी ॥
मैं उनसे वस्ल में कह देता साफ़ साफ़ अगर। ज़रा भी होती कोई जाय गुफ्तगू बाक़ी ॥
हज़ारों गिरगये मुरझा के गुंचे खिल खिल कर। न उन का रूप है ना रंग है न बू बाक़ी ॥
वोह ज़िभा करते थे मैं उनके मुंह को तकता था। यह आरज़ू थी न रहजाय आरज़ू बाक़ी ॥
दिखा के जलवा अगर मुंह छिपा लिया तो क्या। है उन का अक्स मेरे दिल में हूबहू बाक़ी ॥
उन्हें मिले हुए मुद्दत हुई किधर है ध्यान। है निर्भय आज तलक जिन की जुस्तजू बाक़ी ॥

॥ लावनी ॥

पहले जो अपना नामो निशान मिटावे।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥
देहसे है आत्मा भिन्न भ्रम क्यों आने,

दोनो के लक्षण ठीक ठीक तू जाने,
अग्नि जल का संयोग जो कोई माने,
बाधक साधक के अर्थ नहीं पहचाने,
जानेसे ग्रन्थि जड़ चेतन की खुलजावे ।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥
नित बोल चाल में बैखरी बानी जानो,
स्वर रूप मध्यमा शब्दों को पहचानो,
प्रथम दोनों से पश्यंति उर आनो,
ध्वनि रूप अवस्था परा शब्द की मानो,
नभसे हो पार यही ध्वनि अशब्द कहलावे ।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥
वोही प्रणव वोही ॐकार मत अटके,
वोही अनहद वोही शब्द ब्रह्म बे खटके,
ब्रह्मांड अखिल वाही में चातुर लटके,
सूक्षम से कारण वोही होय है घटके,
कारण शरीर तज वोही शुद्ध रह जावे ।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥
वेदों का भी है यही अक्षर आधारा,
यही ब्रह्मा विष्णु शिव को मंत्र पियारा,
श्रुति प्रमाण सब कहा तोसे विस्तारा,

कहे ऐसे ही मांडूक उपनिषध सारा,
मुक्ति का द्वार गीता भी यही बतावे ।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥
धुर अगम देशतक शब्दही का है ज़ीना,
दश मंज़िल हैं जाने कोई चतुर प्रवीना,
कहीं मधुर बाँसुरी बजे बजे कहीं बीना,
घनघोर शब्द हो कभी कभी हो झीना,
यह गुप्त भेद किसी बिरले पर खुलजावे ।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥
जो शब्द ब्रह्म को सुरत लगाय टटोले,
वो सोहं सोहं सोहं सोहं बोले,
चढ़ पवन पै तीनो लोक में हंसा डोले,
छहों चक्रन बेधे दशम द्वार को खोले,
इस देश में हंसा परमहंस बनजावे ।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥
है गगन मंडल में रुचिर एक चौबारा,
हीरे मोती नीलम का जड़ाव सारा,
जो अगम देश को जाते जाते हारा,
ठहरे वहां पलभर मिटे हारपन सारा,
त्रिबेणी पार हो मानसरोवर न्हावे ।

फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥
जब गगन मंडल की सैर करे कछु काला,
तब अन्धकार मिट जाय होय उजियाला,
प्रकाश तैं बढ़ कर आवे देश निराला,
निष्किञ्चन रक्त न श्वेत न पीत न काला,
वो अद्भुत भाव लखे तब निश्चय आवे ।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥
स्थूल देह को त्याग अकेला हो तू,
और इन्द्रिन का भी सर्ब झमेला खो तू,
ला ज्ञानका साबन अन्तस का मल धो तू,
लख असंग आपको अलग सबोंसे हो तू,
यूं अगम देश की राह सुगम होजावे ।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥
बिन मुख बोले बिन जिव्हा सवाद आने,
न्यारी न्यारी बिन नाक गंध पहचाने,
बिन चित चितवन करे बिन मन अति हर्षाने,
बिन बुद्धी अर्थ चारों वेदों का जाने,
बिन अहंकार निर्भय स्वरूप दर्शावे ।
फिर उसको पूरण ब्रह्म साफ़ दिखलावे ॥

—

॥ लावनी ॥

अधर सिंहासन डोले आसन जमाके बैठे जतीजी।
दहिने अंग विराजें शंकर बाएँ बिराजें सतीजी ॥
महादेव देवन के स्वामी, रूप अरूप है नाम अनामी,
अविनाशी उर अन्तर्यामी, अखिल विश्वके पतीजी ॥
अधर सिंहासन डोले आसन जमाके बैठे जतीजी।
अचल अखंड अपार कहावें, बाहर भीतर खेल मचावें,
दृष्टि में कबहू नहीं आवें, अचिन्त्य अद्भुत गतीजी ॥
अधर सिंहासन डोले आसन जमाके बैठे जतीजी।
सूघें सुनें छुवें और चाखें, सोवें लेन देन करें भाषें,
जितने विषय सभी प्रकाशें, काहू में नहीं रतीजी ॥
अधर सिंहासन डोले आसन जमाके बैठे जतीजी।
नेतीनेती कहें वेद पुराणा, कैसे कोई करे अनुमाना,
निर्भयराम अनुभवसे जाना, अकथ कहानी कथीजी ॥
अधर सिंहासन डोले आसन जमाके बैठे जतीजी।

॥ कवित्त ॥

ब्रह्म तो वही है जो सच्चित् आनन्द घन निर्विकल्प निर्विकार स्वयं नित प्रकाशे है। माया तो वहीहै जो रज तम सत्त गुण को धार नाना रूप नामों में

उपजे और विनाशे है ॥ ईश्वर तो वही है निज रूप को न भूले कभी माया गहे माया से पृथक् ही भासे है। जीव तो वही है जो अविद्या संयोग पाय भूला निज रूप भ्रम फाँसना निकासे है ॥

॥ कवित्त ॥

अक्षर तो वही है जो ब्रह्म को जनावे रूप यही चारों वेदों का अर्थ मथ पाया है । रूप तो वही है जो नाम सें न न्यारा होत जैसे आकाश रूप नाम में छिपाया है ॥ नाम तो वही है जिसे कहते सब राम राम राम से पृथक् बकवाद मन लाया है। राम तो वही है जो उपाधि से भिन्न हो पूरण ब्रह्मांड में सम रस समाया है ॥

॥ कवित्त ॥

कर्म तो वही है जामें संग का न लेश हो शुभ अशुभ कर्त्ता को अर्पण कर डारो है । भक्ति तो वही है जिन एक राम नाम पर तन मन धन दारा सुत सर्व ही को वारो है ॥ योग तो वही है जा युक्त से आनन्द होय सो हमने निश्चय कर हृदय बीच धारो है। ज्ञान तो वही है जा ज्ञान में आरूढ़ होय आप

तें अभिन्न ब्रह्म ईश्वर विचारो है ॥

॥ कवित्त ॥

मन्दिर तो वही है जा देह में तू बास करे यासों न उत्तम और दूजा ठिकानो है । आसन तो वही है जो उखड़े न तीनो काल सोवत जगत स्वप्न हू में ज्यूं का त्यूं जमानो है ॥ माला तो वही है जो गुप्त फिरे आपही आप काठ सूत फेरने का झगड़ा मन मानो है । देव तो वही है तू जाको कहै आत्म देव श्रुति ने भी परम देव याही को बखानो है ॥

॥ कवित्त ॥

तीर्थ तो वही है जा तीर अर्थ सिद्ध होय गुरू के सिवाय सो तो कित हू न पायो है । अर्थ तो वही है जामें माया का न लेश हो खोजत खोजत सो तो आत्मा ही हाथ आयो है ॥ गुरू तो वही है जिन्ह मिथ्या भ्रम दूर कियो ऐसा सत् शब्द टेर टेर के सुनायो है । शब्द तो वही है जो शब्द आद वेदन की सृष्टि का कारण स्वतः सिद्ध ठहरायो है ॥

॥ कवित्त ॥

व्रत तो वही है जा व्रत ही नें अंतस को सगरो

मल धोय धोय निर्मल करदीनो है। मल तो वही हैं जो काम क्रोध लोभ मोह इनही तें अनातम में आत्म भाव चीनो है॥ अन्तस तो वही है जामें देव को प्रतिबिंब रहै वाको जो न शुद्ध करे सो तो मति हीनो है। प्रतिबिंब तो वही है जो बिंब से न न्यारा कभू निर्भय ताको सूझे जिन उपाधि वाध कीनो है॥

दोहा॥

जब तक होत सुभाव तें, अहं बुद्धि का भान।
स्वाँसा जहाँ ठहरे तहाँ, चिदाकाश धर ध्यान॥
चिदाकाश चहुं दिश लखें, इत उत गिने न संत।
यही ज्ञान की स्थिति, यही जोग का अंत॥
या विधि आत्म अर्चना, निर्भय तब ही होय।
द्वन्द सकल जाते रहें, दुबधा रहै न कोय॥
सर्ब मेव ॐकार इति, दृढ़ निश्चय मन लाय।
मगन रहै आनन्द में, जब लग पार बसाय॥
बुद्धि जब विपरीत हो, तब हो यही विचार।
नेह नानास्ति किंचनः, श्रुति कहै पुकार॥
नेम रहो या ना रहो, प्रेम रहै भरपूर।
निर्भय सुख का पन्थ है, हठ की कहा जरूर॥
ब्रह्म आत्मा दो नहीं, निर्भय क्यों सकुचाय।

तुही एक बहु रूप है, द्वैत हुआ कछु नाय ॥
सब योगन का मूल है, सब ज्ञानन का सार ।
चित चेतन को एक कर, निर्भय कहै पुकार ॥
जाग्रत और सुषुप्ति की, संधी सों लौ लाय ।
निर्भय निर्भय हो रहो, कपट अमल बिसराय ॥

॥ पद ॥

आला वोह दर्वेश कहावे ।
दृढ़ आसन सन्तोष का खप्पर सत्य लंगोट चढ़ावे,
प्रेम की सेली ध्यान का आसा ज्ञान भभूत रमावे ॥
आला वोह दर्वेश कहावे ।
दया धर्म दोऊ जटा बाँध के समता तिलक लगावे,
अजपा जाप सुरत सों लावे घट में अलख जगावे ॥
आला वोह दर्वेश कहावे ।
अन्तर धूनी लगा जतन सों प्राण पवन ठहरावे,
सहज ही सहज नेम कर फूंके ब्रह्म अग्नि परचावे ॥
आला वोह दर्वेश कहावे ।
तीन ग्रन्थि षट् चक्रन् बेधे दशम द्वार तक जावे,
उलट नैंन निरखे छबि निर्भय सत गुरु भेद बतावे ॥
आला वोह दर्वेश कहावे ।

—

॥ पद ॥

हमें ना सूझे अजपा सा कोई जाप ।
ना आसन चहिये ना माला हृदय कमल में हो उजि-
याला, स्वाँसा में मनवाँ रम जावे रहजा आप ही आ-
प ॥ हमें ना सूझे अजपा सा कोई जाप ॥
महा काश के बाहर भीतर अखंड एक ही जाप, ध्यान
की ओट ज्ञान से परखो अनहद धुन का अलाप ॥
हमें ना सूझे अजपा सा कोई जाप ।
चाहे बन बन हेरत डोलो चाहे वेद पुराण टटोलो,
नेम करो चाहे व्रत राखो बढ़ें पुन्य और पाप ॥
हमें ना सूझे अजपा सा कोई जाप ।
निर्भय नानक सुंदर दादू कबीर तुलसीदास, बाहर
भीतर आते जाते अंत हुए गरगाप ॥
हमें ना सूझे अजपा सा कोई जाप ।

॥ पद ॥

हम सोहं नाम पद जाना है ।
अनुभव रूप सरूप देव को, ना रजनी ना भाना है ॥
हम सोहं नाम पद जाना है ।
इत शशि आवें उत रवि जावें, दोनों के बीच समाना

है ॥ हम सोहं नाम पद जाना है ।
पंचकोश और तीन गुनन तें, भिन्न २ कर छाना है ॥
हम सोहं नाम पद जाना है ।
निर्भय राम साक्षी तेरा, किस को और जिताना है ॥
हम सोहं नाम पद जाना है ।

॥ पद ॥

कढ़े कोई बिरला जग है जाल ।
एक फंद से पिंड छुड़ावे, दूजे में पड़ है ततकाल ॥
कढ़े कोई बिरला जग है जाल ।
बाहर ध्यान ज्ञान की बातें, अंतर चले औरही चाल ॥
कढ़े कोई बिरला जग है जाल ।
कुछ शुमार राखे नहीं दम का, हम हम करत बजावत गाल ॥ कढ़े कोई बिरला जग है जाल ।
वही निर्भय भवसागर तरहें, सतगुरु जिन पर होंय दयाल ॥ कढ़े कोई बिरला जग है जाल ।

॥ पद ॥

कृष्ण फिरें कुंजन में क्या सोती है व्रजनार ।
जा मोहन पर भई दिवानी, मोरी सुनी न मन की मानी, वोही आये हैं सो हम जानी, टेर रहे खड़े द्वार ॥

कृष्ण फिरैं कुंजन में क्या सोती है ब्रजनार।
सोहं सोहं धूम मचाई, बड़ा ग़ज़ब नहीं देत सुनाई, श्यॉंमसुंदर है राम दुहाई, हेरत भई बड़ी वार॥
कृष्ण फिरैं कुंजन में क्या सोती है ब्रजनार।
चाल अनोखी चितवन बांकी, रस भरे बोल मनोहर झांकी, जगमग जोति जगे नैंना की, खिल रही अजब बहार॥ कृष्ण फिरैं कुंजन में क्या सोतीहै ब्रजनार।
सेज बिछीहै शून्य अटारी, उठ शृंगार कर निर्भय प्यारी, परमानंद हो खोल किवारी, क्यों बैठी मन मार॥
कृष्ण फिरैं कुंजन में क्या सोती है ब्रजनार।

॥ पद ॥

मोहे नीको लागे बाजे अनहद तूर।
सोहं सोहं सोहं सोहं, धुन चहुं दिश रही पूर॥
मोहे नीको लागे बाजे अनहद तूर।
अन्तरिक्ष पाताल स्वर्ग में, शब्द रह्यो भरपूर॥
मोहे नीको लागे बाजे अनहद तूर।
रैन दिना अंतर और बाहर, नेरे सन्मुख दूर॥
मोहे नीको लागे बाजे अनहद तूर।
निर्भय राम यही ध्वनि गहलो, दर्शे नूर ही नूर॥
मोहे नीको लागे बाजे अनहद तूर।

॥ पद ॥

गोपाला मेरी सुध काहे बिसराई ।
आओ नैया मोरी बूड़न लागी, केशव राम दुहाई ॥
गोपाला मेरी सुध काहे बिसराई ।
गज को ग्राह से तुरत छुड़ायो, अब क्यों वार लगाई ॥
गोपाला मेरी सुध काहे बिसराई ।
समदरशी तोहे कहें सब कोई, दुख भंजन सुखदाई ॥
गोपाला मेरी सुध काहे बिसराई ।
निर्भय राम धुन छूट न जाये, प्राण रहो या जाई ॥
गोपाला मेरी सुध काहे बिसराई ।

॥ पद ॥

साजन बिन नित नई होत पीर ।
उमड उमड जुबना चढ़ आयो, घुमड घुमड नैनन में छायो, गरज गरज पिया पिया रट लायो, वर्ष वर्ष बहो जात नीर ॥
साजन बिन नित नई होत पीर ।
तड़प तड़प जियरा घबरानो, धड़क धड़क छतियाँ अकुलानो, धमक धमक लगो सीस फिरानो, मसक मसक फट गयो चीर ॥

साजन बिन नित नई होत पीर ।
घर काटे बन सूना लागे, भूषण बसन बिषय रस त्यागे, सूनी सेज निरख डर लागे, लाज गई ना रहो धीर ॥
साजन बिन नित नई होत पीर ।
निर्भय सखी कहत कर जोरी, इतनी बात मानलो मोरी, जीवन की आसा तजदोरी, सुख सागर को गहो तीर ॥ साजन बिन नित नई होत पीर ।

॥ पद ॥

अपने ही संकल्प तें आप ही सुखी दुखी होवे ।
अपने बेगाने की मृत्यु जब एकही काल होवे, अपने का शोक बेगाने का क्यों शोक नहीं होवे ॥
अपने ही संकल्प तें आप ही सुखी दुखी होवे ।
मन ही की माया है मनहीं को राग द्वैष होवे, तू अभिमानी बन वृथा कबहूं हँसी है कबहूं रोवे ॥
अपने ही संकल्प तें आप ही सुखी दुखी होवे ।
तू देह नहीं संदेह में वृथा अपना काल खोवे, येह देह किसीकी रही नहीं क्या मलमल कर धोवे ॥
अपने ही संकल्प तें आप ही सुखी दुखी होवे ।
निर्भय सङ्कल्प कर निर्भय अपना नाम क्यों डबोवे,

संकल्प मेट हो निर्भय निर्भय नाम तभी सोवे ॥
अपने ही संकल्प तें आप ही सुखी दुखी होवे ।

॥ पद ॥

ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।
शून्य अशून्य नहीं रूप अरूप नहीं, अलख अचिं-त्य अपारा है ॥
ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।
बन्धन मुक्त न नाम अनामी, गुण अवगुण तें न्यारा है ॥
ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।
व्यापक अद्वितीय सम रस है, अविनाशी निरा-धारा है ॥
ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।
सत्‌चित आनंद अचल निरंजन, सब जीवन को प्यारा है ॥
ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।
मन से परे बुद्धि से बाहर, निर्भय राम बिचारा है ॥
ऐसो देश हमारा साधो ऐसा देश हमारा है ।

—

॥ लावनी ॥

है एक एक स्वाँस अमोल बृथा मत खोवे ।
दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवे ॥
तू किसी का नाहीं नाहीं कोऊ तिहारा,
है इन्द्रजालवत झूठा सब संसारा,
नर शरीर लख चौरासी भोग कर धारा,
जो अब चूका तू जीती बाजी फिर हारा,
आपेको देख विपरीत बेल मत बोवे ।
दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवे ॥
एक परमहंस अपनी धुन में आते हैं,
दम दम में अलख जगा कर रमजाते हैं,
जितने ज्ञानी वा ध्यानी कहलाते हैं,
उन की सेवा सब उत्तम बतलाते हैं,
मिल जाँय जबै दृढ़ करके कोई टटोवे ।
दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवे ॥
दो बाग़ हैं जिनसें ब्रह्म लोक शरमावे,
एक बाहर दूजा भीतर साफ़ दिखावे,
पत्ते फल फूल निरख मन अती लुभावे,
जो खावे फल को अचल अमर होजावे,
पर सूझे उसे जो अंतस का मल धोवे ।

दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवे ॥
एक बाग़ में कोटिन्ह सूर्य का उजियारा,
दूजे में अनगिन शशी ने प्रकाश धारा,
बाग़ों की शोभा ऐसी अगम अपारा,
निरखत ही निरखत महा बली मन हारा,
करें शेष सुरेश गणेश कथन नहीं होवे।
दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवे ॥
वोह परमहंस जी मुख से कभू न बोलें,
नित पवन पै चढ़ दोनों बागों में डोलें,
कितना ही अंजन इन आँखों में घोलें,
सूझे नहीं जबतक हिये की आँखें खोलें,
बिन बिंधा मोती कहो कैसे कोई पिरोवे।
दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवे ॥
वोह परमहंस जिस मारग आवे जावे,
वा मारग में चित सावधान ठहरावे,
चलते ही चलते सन्मुख बाग़ दिखावे,
और परमहंस का भाव समझ में आवे,
निर्भय घृत निकला अब मत छाछ बिलोवे।
दिन चला जाग बेख़बर पड़ा क्या सोवे ॥

—

॥ लावनी ॥

आँखों में बंधा वोह तार तेरी आँखों का ।
देखूं हूं जलवा हरबार तेरी आँखों का ॥
खुलगया आज इसरार तेरी आँखों का,
कुल आलम है इज़हार तेरी आँखों का,
तूरही पर नहीं मदार तेरी आँखों का,
हर संग में निहाँ शरार तेरी आँखों का,
नक़्शा हर दरोदीवार तेरी आँखों का ।
देखूं हूं जलवा हरबार तेरी आँखों का ॥
हर आँख में भरा खुमार तेरी आँखों का,
हर जुबान में तकरार तेरी आँखों का,
हर दिल में नूर इकसार तेरी आँखों का,
हर अक़्ल में है इक़रार तेरी आँखों का,
वोह कौन नहीं बीमार तेरी आँखों का ।
देखूं हूं जलवा हरबार तेरी आँखो का ॥
चक्कर रहै लैलोनिहार तेरी आँखों का,
अब बदलना है दुशवार तेरी आँखों का,
अय यार में ताबेदार तेरी आँखों का,
आँखों से हुक्म बरदार तेरी आँखों का,
नहीं होवे बरफ़ ज़िनहार तेरी आँखों का ।

देखूं हूं जलवा हरबार तेरी आँखों का ॥
हुवा इशारा जब इकबार तेरी आँखों का,
लिया ख़ाका तभी उतार तेरी आँखों का,
अब और ज़ियादा प्यार तेरी आँखों का,
हर शक्क में है दीदार तेरी आँखों का,
निर्भय निर्भय सरशार तेरी आँखों का।
देखूं हूं जलवा हरबार तेरी आँखों का ॥

॥ ग़ज़ल ॥

स्वाँस का ज्ञान है और ध्यान गगन में अपना,
आज कल हाल दिगरगूंहै वतन में अपना।
लब पे जाँ आई है जीने का भरोसा क्या है,
हाय क्या हाल हुवा दिल की लगन में अपना।
ना वो गुल है नवो गुँचा न नसीमें सहरी,
जा के क्या होगा रहा कौन चमन में अपना।
जान को दिल को कलेजे को जिगर को दम को,
किस को बतलाऊँ खुदा ख़ानए तन में अपना।
निर्भय दुनियाँ में रहो सबसे मिले सबसे अलग,
कुछ बिगड़ने का नहीं ऐसे चलन में अपना।

॥ ग़ज़ल ॥

लज़्ज़ते वस्ल अगर ख़्वाब में पाई होती,

वहम झूठा है दुई का यह गवाही होती ।
अगर उस गुलपे तबीयत तेरी आई होती,
बाग़े आलम की ना आँखों में समाई होती ।
काश आईने से उन की न रसाई होती,
मतलए दिल पे नज़ंगे खुदी छाई होती ।
एक ही दौरे में मिट जाता दुई का ख़दशा,
रंग अपना मए वहदत कहीं लाई होती ।
कुछ खुदाका कभू बिगड़ाहै खुदीसे बतला,
एक फ़रऊन क्या फ़रऊन खुदाई होती ।
वोह उठा लेते मुक़ाबिल से अगर आईना,
फिर तो यकताई की घरघर में दुहाई होती ।
नतो लुकमाँ न फ़लातूँ न धन्वंतर मरता,
मौत आए नहीं ऐसी जो दवाई होती ।
निर्भय दुनियाँ से गये और न उक़बाके रहे,
जिनसे कबहू न भलाई न बुराई होती ।

॥ पद ॥

छैल साँवरिया हो कहाँ लगादी वार ।
तुम बिन रस सारे भए फीके, जाने क्यों सरकार ॥
छैल साँवरिया हो कहाँ लगादी वार ।
श्रवण करत नहीं रूठ गये हो, टेर टेर रहो हार ॥

छैल साँवरिया हो कहाँ लगादी वार ।
मन रोके नहीं रुकत अनारी, बहा जात मजधार ॥
छैल साँवरिया हो कहाँ लगादी वार ।
काहूने छोड़ा नहीं अजहूं, अपने यार को यार ॥
छैल साँवरिया हो कहाँ लगादी वार ।
निर्भय राम है मित्र तिहारो, बेड़ा लगाओ पार ॥
छैल साँवरिया हो कहाँ लगादी वार ।

॥ पद ॥

प्रीति की रीति आप नहीं जानत,
हमरा दोष बतावत डोले ।
प्राणन तें हरि हरि रटलाऊं, पट की ओट समाध ल-
गाऊं, तकती की तकती रहजाऊं, श्याम अचानक
घूंघट खोले ॥
प्रीति की रीति आप नहीं जानत,
हमरा दोष बतावत डोले ।
हा हा करत करत मैं हारी, बिनती सुनत नहीं बन-
वारी, मांगत यौवन दान अनारी, आँख दिखावत
कड़वा बोले ॥
प्रीति की रीति आप नहीं जानत,
हमरा दोष बतावत डोले ।

पहले तो बैराग बतायो, आतम संयम योग सिखायो, अब दईमारो काम जगायो, अंगिया में कर डार टटोले ॥

प्रीति की रीति आप नहीं जानत,
हमरा दोष बतावत डोले ।

तन मन सुख संपति परिवारा, जानलियो कछु नाहिं हमारा, निर्भय राम या बंसीवारा, अमृत में देखो बिष घोले ॥

प्रीति की रीति आप नहीं जानत,
हमरा दोष बतावत डोले ।

॥ कवित्त ॥

नित्य मुक्त नित्य शुद्ध निर्विकल्प निर्विकार निष्करीय निर्मल निसंग निराधारा है । अक्षर अलख अज अचल अखंड नित्य निगुण निरंजन अविनाशी निराकारा है ॥ पुरुष प्रकृति नाहीं ब्रह्मा और सृष्टि नाहीं श्रुति और स्मृति नाहीं एक ॐकारा है । बोध ना अबोध मानो तम ना प्रकाश जानो भाव मात्र रूप भानो मिला है न न्यारा है ॥ आप ही ब्रह्म आप ही जीव आप ही माया आप ही ईश आप ही बाहर आप ही भीतर आपहि पार अपारा है । ना तो कुछ

हुआ था न अब है न होवे आगे वोह तो आप ज्यूं का त्यूं है ह्मारा है न थारा है ॥ आदि जोई अन्त जोई मध्य काल मानो सोई सुषुप्ति जाग्रत स्वप्न वाही को पसारा है । देश काल शब्द अर्थ कारज कारण व्यर्थ निर्भय एक सत्य ब्रह्म और भ्रम सारा है ॥

॥ पद ॥

बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
काहे की कुंजी काहे का तारा, कौन जतनसो डारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
कैसा है घर दर्वाजा कैसा, काहे का लगा किवारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
कौन वस्तु घर में रख भूली, कौनसा भूलन हारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
किस बिधि खुले कौन खोलेगा, कौनसा काल विचारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
बड़ी बार भई चेत अनारी, जीवन की क्यां सारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
निर्भय सीख मान मत माने, कहना काम हमारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।

पहले तो बैराग बतायो, आतम संयम योग सिखायो, अब दईमारो काम जगायो, अंगिया में कर डार टटोले ॥

प्रीति की रीति आप नहीं जानत,
हमरा दोष बतावत डोले।

तन मन सुख संपति परिवारा, जानलियो कछु नाहिं हमारा, निर्भय राम या बंसीवारा, अमृत में देखो बिष घोले ॥

प्रीति की रीति आप नहीं जानत,
हमरा दोष बतावत डोले।

॥ कवित्त ॥

नित्य मुक्त नित्य शुद्ध निर्विकल्प निर्विकार निष्करीय निर्मल निसंग निराधारा है। अक्षर अलख अज अचल अखंड नित्य निगुण निरंजन अविनाशी निराकारा है॥ पुरुष प्रकृति नाहीं ब्रह्मा और सृष्टि नाहीं श्रुति और स्मृति नाहीं एक ॐकारा है। बोध ना अबोध मानो तम ना प्रकाश जानो भाव मात्र रूप भानो मिला है न न्यारा है॥ आप ही ब्रह्म आप ही जीव आप ही माया आप ही ईश आप ही बाहर आप ही भीतर आपहि पार अपारा है। ना तो कुछ

हुआ था न अब है न होवे आगे वोह तो आप ज्यूं का त्यूं है म्हारा है न थारा है ॥ आदि जोई अन्त जोई मध्य काल मानो सोई सुषुप्ति जाग्रत स्वप्न वाही को पसारा है । देश काल शब्द अर्थ कारज कारण व्यर्थ निर्भय एक सत्य ब्रह्म और भ्रम सारा है ॥

॥ पद ॥

बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
काहे की कुंजी काहे का तारा, कौन जतनसो डारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
कैसा है घर दर्वाजा कैसा, काहे का लगा किवारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
कौन वस्तु घर में रख भूली, कौनसा भूलन हारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
किस बिधि खुले कौन खोलेगा, कौनसा काल विचारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
बड़ी बार भई चेत अनारी, जीवन की क्यां सारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।
निर्भय सीख मान मत माने, कहना काम हमारा है ॥
बिन कुंजी खुलत नहीं तारा है ।

॥ पद ॥

मनमोहन जादू डारा है ।
अपना बिगाना सूझत नाहीं, केवल ध्यान तुह्मारा है ॥
मनमोहन जादू डारा है ।
अष्ट प्रहर रैन दिन छिन पल, दमभर को नहीं न्यारा है ॥
मनमोहन जादू डारा है ।
सुख संपति तन मन परवारा, सगरो तुम पर वारा है ॥
मनमोहन जादू डारा है ।
जो कुछ हो तुम हो हम नाहीं, अब तो यही बिचारा है ॥
मनमोहन जादू डारा है ।
निर्भय कौन सुने को कहवे, जैसा हाल हमारा है ॥
मनमोहन जादू डारा है ।

॥ पद ॥

कुछ अमर नहीं राम क्या माँगूं ।
जा तन में विशेष अनुरागा, सो तन खाये हैं चौंचन का-
गा ॥ कुछ अमर नहीं राम क्या माँगूं ।
सुख संपति मांगत संसारा, ताको जात न लागत वा-
रा ॥ कुछ अमर नहीं राम क्या मांगू ।
सखा सनेही सुत अलबेला, मोहनी नारि दो दिन का

मेला ॥ कुछ अमर नहीं राम क्या मांगूं ।
सीसमहल रंगमहल तँबेला, छत्र सिंहासन झूठ झमेला ॥ कुछ अमर नहीं राम क्या मांगूं ।
बल विद्या गुण मान बड़ाई, सुपने का धन राम दुहाई ॥ कुछ अमर नहीं राम क्या मांगूं ।
तुमरी गती हो धाम तुह्मारा, निर्भय कछु मांगत नहिं न्यारा ॥ कुछ अमर नहीं राम क्या मांगूं ।

॥ पद ॥

मन तुम राम सनेही होना ।
बड़े भाग मानुष तन पायो, बृथा स्वाँस मत खोना ॥
मन तुम राम सनेही होना ।
ज्ञान रूप साबन से निशि दिन, अंतश के मल धोना ॥
मन तुम राम सनेही होना ।
या नगरी मैं चोर बहुत हैं, हर दम चौकस रहना ॥
मन तुम राम सनेही होना ।
निर्भय व्याह का रस चाखो तो, बेग करालो गौना ॥
मन तुम राम सनेही होना ।

॥ कवित्त ॥

पढ़े छहों शास्त्र अठारहों पुराण देखे वेदों को भी

आदि से अन्त तक छाना है । तीर्थ व्रत तप दान योग ध्यान ज्ञान स्नान संध्या बंदन तर्पण का भाव सब जाना है ॥ पढ़ी शिल्प विद्या और ज्योतिष को भली भांति रमल का भी भेद बिधि पूर्बक पहिचाना है । वैद्यक के न्यारे न्यारे जाने हरएक अंग नाड़ी पहिचानना और नस्तर का लगाना है ॥ जानी हैं बणिज और ब्यवहारन की रीति सब खोटे और खरे का ज्ञान उर आना है । चाकरी के जेते सभी जाने हैं दाँव घात जाना है खेती फुलवारी का जमाना है ॥ जाना है ढोलक मृदंग झांझ सारंगी शहनाई सितार और तंबूरे का बजाना है । जाना है ध्रुपद मल्हार देश कालंगड़ा काफी बिहाग राग सोरठ का गाना है ॥ जाना है बनाना रुपये और अशर्फ़ी का जाना है अनेक भांति कलों का घुमाना है । इतना जिन जाना वा ख़ाक नहीं जाना है जाना है वाही जिन राम नाम जाना है ॥

॥ कवित्त ॥

रामही के नाम को अनेक जन पुकार रहे मस्जिद में मन्दिर में गिरिजा में टेर टेर । रामही के रूप को अनेक जन निहार रहे दृगन में हृदय में त्रिकुटी में

हेर हेर ॥ राम ही के भाव को अनेक जन बिचार रहे बाणी या अंतःकरण बीच घेर घेर । राम हीं हैं सर्ब ठौर दूसरा न कोऊ और निश्चय कर मानों कुछ यामें नहीं हेर फेर ॥ जैसी जाकी भावना हो तैसे ता को देख पड़ें जभी हेरे तभी कभू नेक ना लगावें दे-र । निर्भय राम राम को एकबार हेरो तौ राम को हेरत हैं आरत जन बेर बेर ॥

॥ कवित्त ॥

नाम रूप यदि अनेक सब में पर तत्व एक वाही तत्व तेरा स्वरूप वाही राम है । रात दिन आठ प्र-हर चौंसठ घड़ी साठ पल स्वाँसों स्वाँस रट राम नाम सों न नाम है ॥ बद्री केदार दूर दूर अवध द्वा-रिका है पुष्कर कैलाश दूर दूर गोकुल ग्राम है । अपने ही हृदय में निहार रूप राम को यासों न नेरे दूजा और कोई धाम है ॥ झूठे दारा सुत धन झूठा सगरो तन मन झूठा इन्द्र ब्रह्म लोक माया को प्रणाम है । चिंतामणि कामधेनु कल्पवृक्ष सर्ब झूठे साँचो राम नाम सुख जामें आठों याम है ॥ झूठे तप ब्रत दान हठ योग मिथ्या जान पंच अग्नि जल धारा सहनो शीत घाम है । राम ही को ध्यान कर निर्भय सब

काम छोड़ यासें न उत्तम और प्राणी को काम है ॥

॥ कवित्त ॥

कोट कोट उपावन तें छूटे न जन्म मरण एक राम नाम सुमर बंधन नर टारे है । कोट कोट मंत्रन सें अंतश न शुद्ध होत रामहीं को नाम एक सगरे मल जारे है ॥ कोट कोट बस्तु पाय तृष्णा न दूर होय केवल राम नाम ही तृष्णा बिडारे है । कोट कोट देव धाय राम नहीं दरसत हैं राम ही के धाये निर्भय राम को निहारे है ॥

॥ कवित्त ॥

लोक में अविद्या के अनेक बकवाद भरे राम सुमर खींच मन सब ही की ओर सों । वेद में भाँति भाँति विद्या के बिवाद हैं राम नाम पकड़ भाग वृथा और शोर सों ॥ नाना पंथ नाना बेष नाना ग्रंथ नाना लेख राम नहीं दरशत हैं काहू के जोर सों । निर्भय राम राम की सौगंद राम दरशत हैं राम ध्वनि लागे जब अनुभव झकोर सों ॥

॥ कवित्त ॥

राम ही को नाम जारे काम क्रोध लोभ मोह राम

ही को नाम जो निकारे नर्क बास तें । राम ही को नाम नाना जगत की त्रास हरे राम ही को नाम जो बचावे यम त्रास तें ॥ राम ही को नाम दे उभार भवसागर तें राम ही को नाम जो छुड़ावे मिथ्या आस तें । निर्भय राम राम को नाम जानें पकड़लिया वाको डर नाहीं अविद्या रूपी फाँस तें ॥

॥ कवित्त ॥

राम ही को नाम रटे बुद्धि बल प्रवल होय राम ही को नाम रटे उत्तम कुल पावे है । राम ही के राम रटे चक्रवर्त्ती राज्य मिले राम ही का नाम बैकुंठ दिखलावे है ॥ राम ही के नाम रटे ऋद्धि और सिद्धि होय राम ही को नाम इन्द्रासन पर बिठावे है । राम ही का नाम रटे निर्भय नर देह मिले राम राम रटत निर्वाण होजावे है ॥

॥ कवित्त ॥

ब्रह्मा जी राम ही की शक्ति पाय सृष्टि रचें राम ही का ध्यान करें राम ही सत माने हैं । बिष्णु भी राम ही की माया तें पालन करें राम ही को रूप निज रूप पहिचाने हैं ॥ सदा शिव राम ही के बल सों

सिंहार करें राम ही के भाव को परम आनंद जाने हैं । निर्भय राम वेद भी राम ही को गायन करें वेद बिन राम ही को आत्मा बखाने हैं ॥

॥ कवित्त ॥

उठते हू तू राम भज और बैठे हू तू राम भज खड़े हू तू राम भज और पड़े हू भज राम को । चलते हू तू राम भज और फिरते हू तू राम भज खाते हू तू राम भज और पीते हू भज राम को ॥ बोलत हू तू राम भज और चुपके हू तू राम भज देते हू तू राम भज और लेते हू भज राम को । सूंघत हू तू राम भज और सुनत हू तू राम भज निर्भय आठों याम हू तू राम भज भज राम को ॥

॥ कवित्त ॥

द्रोपदी ने हृदय में सँभारा जब राम नाम उघरो न अंग चीर बढ़ता गया ताने सें । ध्रुव को कैसी उत्तम पदवी मिली देखलो राम ही को नाम सत आसरा पहचाने सें ॥ हिरनाकुश मारो की रक्षा प्रहलाद की केवल राम नाम में बिश्वास ठहराने सें । बिभीषण की मोक्ष हुई लंका को राज मिलो निर्भय

राम राम की शरण में आने सें ॥

॥ कवित्त ॥

ग्राह तें छूट गयो फंद गजराज को एक ही बार राम नाम उर आने से। शिशुपाल को मारो प्रतिज्ञा राखी बचन की प्रेम सों रुक्मणि के राम ओर धाने से ॥ पत्थर से उत्तम तन पायो अहिल्या ने केवल दृढ़ निश्चय राम नाम में लाने से ॥ परम गति पाई निर्भय राम तुलसीदास ने एक राम नाम ही के सदा गुण गाने से ॥

॥ कवित्त ॥

सनकादिक ऋषियन को परम आनंद हुआ राम ही के नाम का यथार्थ अर्थ पाने से । पलटू दादू सूर सुंदरदास और कबीर जी राम में जा मिले राम नाम सत माने से ॥ काशी में निश्चय ही मुक्त होजाय जीव अंत समय राम को नाम सुनपाने से । निर्भय राम काहे तू भाग राम नाम से पारस होजाय राम नाम रस खाने से ॥

॥ कवित्त ॥

भक्त जन अपनी अपनी भावना अनुसार ही

न्यारो न्यारो रूप धाम राम को संभारें हैं । मुनि जन सच्चित् आनंद रूप राम को उत्पत्ति और लय चिंतन कर हृदय में विचारें हैं ॥ योगी जन प्राणन को स्थित कर कपाल में राम को प्रकाश रूप त्रिकुटी में निहारें हैं । परमहंस राम ही को रूप लखें सर्ब ठौर नाना नाम रूप की कल्पना बिडारें हैं ॥

॥ कवित्त ॥

दक्षिण हू में राम हैं और उत्तर हू में राम हैं पूर्व हू में राम हैं और पश्चिम हू में राम हैं । नेरे हू राम हैं अनेरे हू राम हैं बाहर हू राम और भीतर हू राम हैं ॥ देश हू में राम हैं परदेश हू में राम हैं लोक हू में राम हैं परलोक हू में राम हैं । तोमें हू राम हैं और मोमें हू राम हैं यामें हू राम और वामें हू राम हैं ॥

॥ कवित्त ॥

मथुरा में जो राम जो राम अवध द्वारिका में पुष्कर कैलाश काशी वृन्दाबन कश्मीर में । बद्री केदार जगन्नाथ गोकुल नेमषार विंध्याचल हिमाचल और मंदिराचल के तीर में ॥ गंगा यमुना नर्मदा कावेरी सरयू गोमती गंडक गोदावरी त्रिबेणी के नीर में ।

इन्द्र लोक शिव लोक बैकुंठ ब्रह्मलोक में वाही राम बैठो या प्राणी के शरीर में ॥

॥ कवित्त ॥

ऊख में मधुराई जैसे सेंधे में है नमकापन तिलन में है तेल और शीतलता ओले में। नींब में कड़वा पन जैसें मिरच में है तीक्षणता दूध में है घृत और सुगंध है बेले में ॥ आँम में खटाई जैसे अग्नि में है ऊष्णता शोरे में खारापन रुई है बिनौले में। काष्ट में अग्नि जैसे बीज में वृक्ष छिपा ऐसे ही राम छिपा प्राणी के चोले में ॥

॥ कवित्त ॥

बुद्‌बुदे तरंग जल में जलतें न भिन्न कभू जलही ने प्रत्यक्ष न्यारो न्यारो रूप धारा है। सोरण के भूषण जेते सोरण ही नित्य रहें दीपक से पृथक् नहीं दीपक का उजारा है ॥ काठ की कठौती जैसे काठ ही मानी जाय माँटी के बरतन सर्व माटी का पसारा है। निर्भय राम जीव जेते रामही को रूप जान राम से अभिन्न ईश और बिश्व सारा है ॥

—

॥ कवित्त ॥

अपनी हरएक स्वाँस पर तू राम ही को ध्यान रख जहाँ स्वाँस ठहरे वहाँ राम हीं पहिचान तू । स्वाँस ही में आठों याम बास रहै राम को अन्तर और बाहर दोनों ठौर सत्य जान तू ॥ स्वाँस ही के ध्यान तें होजाय ज्ञान राम को स्वाँस ही को पकड़े रहो यही सीख मान तू । ज्ञानन में बाला है योगन में आला है निर्भय राम निश्चय कर राम को चित्त आन तू ॥

॥ लावनी ॥

अमात्र मात्र का रूप प्रथम पहिचानो ।
पश्चात् अर्थ को राम नाम के जानो ॥
उत्पत्ति से लय चिंतन चित्त समावे,
तब अस्ति भांति प्रिय भाव रहिजावे,
इस भाव का निध्यासन से निश्चय लावे,
निश्चय पूरी हो साक्षात् दर्सावे,
यूं मनन नाम का करे वही मुनि मानो ।
पश्चात अर्थ को राम नाम के जानो ॥
इसी राम नाम में स्थित विराट सारा,

है हिरण्यगर्भ इस नाम ही का उजियारा,
कारण का भी है यही नाम आधारा,
इसी नाम का वेद और पुराण में विस्तारा,
यहीनाम आदि यही अंत मध्य यहीठानो।
पश्चात् अर्थ को राम नाम के जानो॥
इसी राम नाम को ब्रह्मा विष्णु शिव गावें,
और बीणा में नारद मुनि यही बजावें,
इसी नाम को तैंतीस कोटि देवता धावें,
सब योगी जती ऋषि मुनि यही रटलावें,
जिन रटा राम भवसागर पार लगानो।
पश्चात् अर्थ को राम नाम के जानो॥
इस नाम की महिमा निर्भय राम अपारा,
क्या अर्थ कहूं इस्से कछहू नहीं न्यारा,
यूं हीं काशी सेवन गिने मोक्ष का द्वारा,
दें राम फूंक शिव कान में मरतीबारा,
यही नाम सारहै समझ यूंही भ्रम भानो।
पश्चात् अर्थ को राम नाम के जानो॥

॥ ग़ज़ल ॥

गुम करदे जो तक़दीर को तदबीर उसे कहते हैं,
तदबीर से ज्यादा नहो तक़दीर उसे कहते हैं।

सब झूठी है काग़ज़ की क्या मिट्टी की क्या पत्थर की,
बुत हो रह तसव्वुर में तसवीर उसे कहते हैं ।
दुनियाँ को अगर क़त्ल करे घाट की ओछी है,
काटे जो अहंकार को समशीर उसे कहते हैं ।
कहता है खुदा खुद से जुदा जान अधूरा है,
दिखलादे जो खुद ही में खुदा पीर उसे कहते हैं ।
सौ पर्त अगर तोड़दे फ़ौलाद के तो क्या है,
तोड़े जो फ़क़त परदा दुई तीर उसे कहते हैं ।
हैं यूं तो बहुत बेदों की तफ़सीर मगर जिस्से,
तसदीक़ अनलहक़ हो तफ़सीर उसे कहते हैं ।
जो कहता है मैं इन्द्र हूं तौक़ीर कहाँ उसकी,
मैं हूं यह गुमा मिट जाय तौक़ीर उसे कहते हैं ।
है आबोहवा ठंडी तो कश्मीर नहीं साहब,
ठंडा हो कलेजा जहाँ कश्मीर उसे कहते हैं ।
दुनियाँ है सराय निर्भय तू जागीर समझता है,
कब्ज़े में हमेशा रहे जागीर उसे कहते हैं ।

॥ रुबाई ॥

भगवत का भजन हो और श्याही क्या है,
खाने को अगर हैं जौं बुराई क्या है ।
तक़दीर पे सबर हो तमन्ना मिट जाय,

जब ऐसा चलन हो फिर गदाई क्या है ।
खुद को पहचान खुद नुमाई मत कर,
बरतर और इस्से पारसाई क्या है ।
दमभर का नहीं भरोसा निर्भय जिस का,
उस देह सें तेरी आशनाई क्या है ।

॥ होली ॥

घट में कैसो फाग मचोरी ।
घन घन नौबत झड़ने लागी अनहद धुन टनकोरी,
सोहं सोहं सोहं सोहं सोहं हं चहुंओरी, शून्य में
शोर पड़ोरी ॥

घट में कैसो फाग मचोरी ।
बाजत बीन मृदंग मुरलिया शंख झांझ ढप घोरी
सुरत निरत कर पिया को रिझावे नैंनन में चोराचोरी
मोहनी मंत्र पढ़ोरी ।

घट में कैसो फाग मचोरी ।
उत सों पिया इत सों मैं धाई प्रेम गुलाल भर झोरी,
ज्ञान को रंग ध्यान सों छिड़ को तार तार दोऊ बोरी,
पाग पिया चूनर मोरी ।

घट में कैसो फाग मचोरी ।
झटपट बैयाँ डार गले में मुख चूंबो बाराजोरी,

निर्भय लिपट चिपट कर पिया सों सो रहो रात रही थोरी, होने दो ऐसे ही होरी ॥
घट में कैसो फाग मचोरी ।

॥ होली ॥

घर आए पिया मैं तो खेलूंगी फाग ।
सोती थी प्रमाद की निंदिया, अकस्मात् सें जागे हैं भाग ॥ घर आए पिया मैंतो खेलूंगी फाग ।
शुभ की घड़ी में सगुन मनाऊं, क्या बोले उड़ जारे काग ॥ घर आए पिया मैं तो खेलूंगी फाग ।
लाओ सखी प्रेम रंग बोरूं, अपनी चूनर और पिया की पाग ॥ घर आए पिया मैं तो खेलूंगी फाग ।
मैं पिया की पिया की पिया मोरे, निर्भय होनेदो या ही राग ॥ घर आए पिया मैं तो खेलूंगी फाग ।

॥ पद ॥

ऊधो जी मैं बैरागन हर की ।
मेरी बिथा कहा तुम जानो बाला यौवन योंहीं गवा-नो, अब जब तें आपा पहिचानो नज़र पड़ी गिरधर की ॥ ऊधो जी मैं बैरागन हर की ।
छतियाँ धड़कत माथा ठनकत बिरह अनल अति भ-

रकी, पटकी लटकी खबर नहीं है सुध नहीं नथबेसर की ॥ ऊधो जी मैं बैरागन हर की ।

सुख संपति की बात कहा है साख गई पीहर की, पति को हित छुटो मोह सुतन को ना रही लाज सुसर की ॥ ऊधो जी मैं बैरागन हर की ।

तन का ध्यान ज्ञान मन का नहीं प्राणन को पड़ी धुर की, निर्भय राम नाम की जोगन घर की ना बाहर की ॥ ऊधो जी मैं बैरागन हर की ।

॥ पद ॥

सत गुरु हो मदिरा कौन पिलाई ।

जब तें पी उतरी नहिं अजहूं दिन दिन चढ़त सवाई,
सब संकल्प विकल्प क्षीण भए निर्विकल्पता छाई ॥
सत गुरु हो मदिरा कौन पिलाई ।

ना कछु विधि निषेध कछु नाहीं समता हिये समाई,
द्रष्टा दर्शन दृश्य भ्रम मिटो भेद बुद्धि बिसराई ॥
सत गुरु हो मदिरा कौन पिलाई ।

मन बाणी की गम्य नहीं है महिमा कही न जाई,
चिदानन्द घन भाव हमारो चहुं दिशि देत दिखाई ॥
सत गुरु हो मदिरा कौन पिलाई ।

सब धुनि छोड़ रामधुनि गहि कर ज्ञान समाधि लगाई,

जीव ब्रह्म ईश्वर एक ही हैं निर्भय राम दुहाई ॥
सत गुरु हो मदिरा कौन पिलाई ।

॥ पद ॥

मेरा कछु नाहीं प्रभु तेरी प्रभुताई है ।
तूने ही तो बिश्व रचा तू ही बिश्व रूप हुवा, तेरा ही तमाशा सारा तू ही तमाशाई है ॥
मेरा कछु नाहीं प्रभु तेरी प्रभुताई है ।
ध्यान है हर आन तेरा हरदम है बयान तेरा, जब से हुवा ज्ञान तेरा निर्भय समझ आई है ॥
मेरा कछु नाहीं प्रभु तेरी प्रभुताई है ।

॥ पद ॥

जो कोई चित से मोहिना बिसारे,
मैंना बिसारूं प्रण है यही मेरा ।
धर्म प्रिय हो धर्म बढ़ाऊं, सुफल कार्य करूं अर्थ बताऊं, मुक्ति चाहे पार लगाऊं, छिन पल माहीं न लागत बेरा ॥
जो कोई चित से मोहिना बिसारे,
मैंना बिसारूं प्रण है यह मेरा ।
रोग हरूं चिंता को टारूं, अभय करूं शत्रुन को मा-

रूं, निर्भय भक्त जन बेग उभारूं, सेवा करूं आप बन चेरा ॥

जो कोई चित से मोहिना बिसारे,
मैंना बिसारूं प्रण है यही मेरा ।

॥ पद ॥

जागते रहना मुसाफ़िर यह ठगों का ग्राम है ।
आँखें खोल अय बेख़बर क्या ख़्वाबे गफ़लत में पड़ा,
दिन तो सारा होचुका अब सिरपे आई श्याम है ॥
जागते रहना मुसाफ़िर यह ठगों का ग्राम है ।
तुझसा ग़ाफ़िल आज तक हमने कभू देखा नहीं,
रहने वाला है कहां का क्या तुम्हारा नाम है ॥
जागते रहना मुसाफ़िर यह ठगों का ग्राम है ।
जाहिलों की बात क्या है लुट गए आक़िल यहाँ,
तुझको जो सूझे सो कर कह देना अपना काम है ॥
जागते रहना मुसाफ़िर यह ठगों का ग्राम है ॥
तन बिरहना ख़ाली हाथों सोने का कुछ डर नहीं,
सोच है निर्भय यही अंटी में तेरी दाम है ॥
जागते रहना मुसाफ़िर यह ठगों का ग्राम है ॥

॥ पद ॥

मिलना कठिन है साधो कैसें मिलों पिया जाय ।
दश मंज़िल के पार गगन में हम सें चढ़ा न जाय,
निर्गुण निराकार स्थल है पांव नहीं ठहराय ॥
मिलना कठिन है साधो कैसें मिलों पिया जाय ।
दुर्गम देश पंथ है झीना जियरा अति घबराय,
शून्य महल में सेज पिया की सूझत नाहिं उपाय ॥
मिलना कठिन है साधो कैसें मिलों पिया जाय ।
जब लग हंसा बोलत चालत सुरत नहीं बिसराय,
मौन गहे निश्चल होजावे फिर कछु नाहिं बसाय ॥
मिलना कठिन है साधो कैसें मिलों पिया जाय ।
सत्‌चित्‌ आनंद भाव पिया को निर्भय गयो समाय,
कैसा नाम रूप गुण कैसो हमको कछुना सुहाय ॥
मिलना कठिन है साधो कैसें मिलों पिया जाय ।

॥ पद ॥

नाथ कहो कैसें भ्रम छूटे,
निज स्वभाव मनवा नहीं त्यागे ।
विषय आनंद को छोड़त नाहीं, ब्रह्मानंद से कोभों भागे ॥ नाथ कहो कैसें भ्रम छूटे,

निज स्वभाव मनवा नहीं त्यागे ।
आतम देव दुखी लघु भासे, जड़ प्रपंच चेतन सत
लागे ॥ नाथ कहो कैसें भ्रम छूटे,
निज स्वभाव मनवा नहीं त्यागे ।
हठ करते करते दिन बीते, सहज सी बात सुरत नहीं
पागे ॥ नाथ कहो कैसे भ्रम छूटे,
निज स्वभाव मनवा नहीं त्यागे ।
निर्भय राम बड़ा रोग लगो है, सुख सों सोवत दुख से
जागे ॥ नाथ कहो कैसे भ्रम छूटे,
निज स्वभाव मनवा नहीं त्यागे ।

॥ पद ॥

मोरी गुइयाँ हो श्याम सों लागे बैरी नैन ।
जब लागे तब कछुहू न जानी, अब लागे दुख दैन ॥
मोरी गुइयाँ हो श्याम सो लागे बैरी नैन ।
साँवरी सूरत माधुरी मूरति, मनमें फिरत दिन रैन ॥
मोरी गुइयाँ हो श्याम सो लागे बैरी नैन ।
लखो नहिं जात बिरह की मारी, बिन देखे नहीं चैन ॥
मोरी गुइयाँ हो श्याम सो लागे बैरी नैन ।
कैसें करूं कोई समझत नाहीं, ह्यारे जिया की सैन ॥
मोरी गुइयाँ हो श्याम सों लागे बैरी नैन ।

निर्भय राम की सगुण मुरलिया, बोलत निर्गुण बैन ॥
मोरी गुइयाँ हो श्याम सों लागे बैरी नैन ।

॥ पद ॥

चलत बनत नहीं जिया घबरावे,
ज्ञान का पंथ कृपाण की धारा ।
जब सत् असत् असत सत् होवे, तब प्रगटै चहुं दिशि उजियारा ॥
चलत बनत नहीं जिया घबरावे,
ज्ञान का पंथ कृपाण की धारा ।
जोग न भोग भक्ति ना मुक्ती, निरालम्ब निर्गुण निराधारा ॥
चलत बनत नहीं जिया घबरावे,
ज्ञान का पंथ कृपाण की धारा ।
कैसें हो अनुमान बताओ, अगम अगोचर अलख अपारा ॥ चलत बनत नहीं जिया घबरावे,
ज्ञान का पंथ कृपाण की धारा ।
निर्भय राम सकल हठ त्यागो, सहज स्वभाव मिटे भ्रम सारा ॥
चलत बनत नहीं जिया घबरावे,
ज्ञान का पंथ कृपाण की धारा ।

॥ ग़ज़ल ॥

अब तो यकताई मेरे दिल में समाई तेरी,
हूबहू शक्ल पड़ी यार दिखाई तेरी ।
आतशे हुस्नसे बस जानोंजिगर क्यों न जले,
लौ ग़ज़ब इश्क़ ने सीने में लगाई तेरी ।
देखते देखते बुत बन गया हैरत न गई,
किस मुसव्विर ने यह तसवीर बनाई तेरी ।
तोड़े आईनेको है वस्लकी ख्वाहिश जिसको,
तेरी तसवीर ने तसख़ीर बताई तेरी ।
मौत समझा था जिसे अस्लमें जीना निकला,
होके मादूम हक़ीक़त नज़र आई तेरी ।
सारी सूरत हुई निर्भय की निगाहों में फ़ना,
जाने जाँ जब से हुई चश्मे नुमाई तेरी ।

॥ पद ॥

जो कोई निर्गुण झर लख पावे ।
शोर में शून्य हो रहे न बोले, पश्यंति से परे टटोले,
सोहं सोहं हंसा बोले, शून्य में शोर मचावे ॥
जो कोई निर्गुण झर लख पावे ।
नैन रूप से हटा न देखे, आरोपित सत्ता सब छेके,

ऐसी छबि अनुभव से पेखे, निरखत नाहिं अँघावे ॥
जो कोई निर्गुण झर लख पावे ।
सारे रस रसना त्यागे, गंध स्पर्स रहै नहिं आगे,
तुरत अमी रस झरने लागे, चाखत ही छक जावे ॥
जो कोई निर्गुण झर लख पावे ।
जो योगी इस पदका मीता, समझ गयाहै पूरी गीता,
निर्भय जीते जीते जीता, आवागमन नसावे ॥
जो कोई निर्गुण झर लख पावे ।

॥ पद ॥

सुनो भाई संतो अक्षर पद को बिचार ।
नित्य शुद्ध नित्य मुक्त निरंजन, निर्विकल्प निश्चल भव भंजन, अजर अमर नित निर्गुण निर्मल, नि-र्विशेष निराधार ॥
सुनो भाई संतो अक्षर पद को बिचार ।
विभु अनंत अद्वैत अविनाशी, पुरुषोत्तम स्वतंत्र सुखरासी, स्वयं प्रकाश असंग अनादी, निष्क्रय निरा-कार ॥ सुनो भाई संतो अक्षर पद को बिचार ।
पूरण ब्रह्म अचिंत्य अरूपा, अप्रमेय अव्यक्त अनूपा, निराकार निर्वयव सनातन, अगम अखंड अपार ॥
सुनो भाई संतो अक्षर पद को बिचार ।

सच्चिदानंद निरीह अनामी, अलख अगोचर अंतर्यामी,
घट घट अंतर निर्भय बोले, हंसःहंसः पुकार ॥
सुनो भाई संतो अक्षर पद को विचार ।

॥ पद ॥

जाय नर तन मानत आप रूप भगवान है ।
अहंकार ने जबते घेरो, कहने लगो मेरो और तेरो,
भूल गया निज रूप अनेरो, तू सर्वज्ञ सुजान है ॥
जाय नर तन मानत आप रूप भगवान है ।
भली बुरी करनी जब करहै, बंधन में तब ही तो परहै,
निष्कृय को ना कछु डर है, तोकोतो कर्म की आन है ॥
जाय नर तन मानत आप रूप भगवान है ।
मैं हूं देह या देह है मेरी, केवल यही भूल है तेरी,
पंचतत्व की यह तो ढेरी, जान क्यों भया अजान है ॥
जाय नर तन मानत आप रूप भगवान है ।
नाम रूप कछु नहीं तिहारो, पंच कोश तें होजा न्यारो,
सत्‌चित् आनंदभाव सँभारो, निर्भय यहनिर्मल ज्ञानहै ॥
जाय नर तन मानत आप रूप भगवान है ।

॥ लावनी ॥

ऊम ज़ाहिर बातिन सब से याराना छोड़ दिया,

फ़क़त आप से प्यार है सारा ज़माना छोड़ दिया ॥
चंदरोज़ा दुनियाँसे बिलकुल दिलका लगाना छोड़ दिया,
बड़ा बहाना यही था अपना बिगाना छोड़ दिया ।
उस जिस्मजाँ चला आताथा बहोत पुराना छोड़ दिया,
हवास ख़मसा का झूठा नाज़ उठाना छोड़ दिया ।
ऐसा ठिकाना मिलाहै मुझको हरएकठिकाना छोड़ दिया,
फ़क़त आप से प्यार है सारा ज़माना छोड़ दिया ॥
विर्ददुआ ओ नमाज संध्या माला फिराना छोड़ दिया,
दहरोहरम में गिरिजा में दिल भटकाना छोड़ दिया ।
पीके जाम उल्फ़त जाना सूये महख़ाना छोड़ दिया,
दीनी दीनवी मय से भरना पैमाना छोड़ दिया ।
नशय शौक़ दीदार में दिलको कर मस्ताना छोड़ दिया,
फ़क़त आप से प्यार है सारा ज़माना छोड़ दिया ॥
राहत में खुश होना सख्ती में रंज बताना छोड़ दिया,
ज़र ज़मीनो ज़न तीनो पे दिलका लुभाना छोड़ दिया ।
आतिशेबुग्ज़ो हसदसे नाहक़ जिगरजलाना छोड़दिया,
पेशे मुक़द्दर सोच करना पछताना छोड़ दिया ।
झूठे बखेड़े झगड़ो में तबियतका फँसाना छोड़ दिया,
फ़क़त आप से प्यार है सारा ज़माना छोड़ दिया ॥
बाबइश्क़को पढ़कर पढ़ना हरएक फ़िसाना छोड़ दिया

राहे बफ़ा में बढ़ा कर क़दम हटाना छोड़ दिया ।
एक ही रंग रंग लिया दूसरा रंग रंगाना छोड़ दिया,
यक़ीन कामिल होगया अब घबराना छोड़ दिया ।
निर्भय देके दिल बैठ रहाहै फिरना फिराना छोड़दिया,
फ़क़त आप से प्यार है सारा ज़माना छोड़ दिया ॥

॥ ग़ज़ल ॥

समझ में जिस बशर के खूब शब्द ॐकार आता है,
उसी से सिर्रे हक़ का ठीक ठीक इज़हार आता है।
जो अपनी आत्मा से हो बिमुख एक बार आता है,
वोह लख चौरासी के चक्कर में सौ सौ बार आता है।
ये माना जौफ़ है जो तुझको ग़श हरबार आता है,
मग़र अय दिल सँभल अब कूँचये दिलदार आता है।
जिन आँखों में तेरा रंग ग़ैरते गुलज़ार आता है,
उन आँखों में नज़र हर गुल बशिक्ले ख़ार आता है।
ख़ता सब भूल जाते हैं निहायत प्यार आता है,
बशर जब ख़म किये गर्दन सरे दर्बार आता है ॥
जहाँ में और हूँ आप और हैं तकरार आता है,
वोह हैराँ होते हैं आईना सौ सौ बार आता है ॥
ख़याले ग़ैरो खुद से पाक हो दुनियाँ

मुझे उल्फ़त उसी की है उसी पर प्यार आता है ।
बशर फँस जाता है खुद आपही अपनी तमन्ना में,
वहाँ से जब बशर आता है खुद मुख़्त्यार आता है ।
मिटे जब दाग़ दिलके हरि का तब हरजा तसव्वुर हो,
जो है बेदाग़ कपड़ा, उसपे रंग इकसार आता है ।
अगर ख़्वाहिश न होती दिलसे उनको मेरे मिलने की,
मेरे नाम उनका हर एक स्वाँस में क्यों तार आताहै ।
जलाना उसको कहते हैं जो ज़िन्दे को जला देवे,
बशर मुर्दे के क़ालिब को जला लाचार आता है ।
वो कज़ बीना यहाँ गुल और वहाँ पर ख़ार देखे हैं,
मुझे जल्वा तेरा यकसाँ नज़र सरकार आता है,
वही हैं तत्व वेत्ता और वक्ता चारों वेदों के।
सुनाई जिन के हर एक रोम में ॐकार आता है ।
यह दुनियाँ है नहीं पर दीखती है इस तरह साहिब,
के जूँ अज्ञात रस्सी में हो सर्पाकार आता है ।
महल का बन्द दरवाज़ा किये ख़िलवत में बैठे हैं,
और हर दम डौढ़ीवानों से यही तकरार आता है ।
कोई कितना पुकारे खोलना हरगिज़ न कुंडी को,
...वें यहाँ फिर कौनसा मक्कार आता है।
... धमकी दीजिये ज़ाहिर परस्तों को,

जो आशिक़ है वो साहब फाँद कर दीवार आता है।
मुझे अय ज्ञान तेरे होने से वो सुख हुवा हाँसिल,
जो बेगारी को हो जब फेंक कर बेगार आता है।
जो भगवत आपमें देखे है निर्भय फिर जरूर उसको,
नज़र भगवत का हर एक चीज में दीदार आता है॥

॥ पद ॥

मो को डर है अति वाही दिन को।
जा दिन हंसा काल के बस हो त्यागे पिंजरा तन को,
मोह प्रबल हो निरखत निरखत बांधव नारि सुतनको।
बाढ़े लोभ तकतक इत उत गृह भूषण बसन बहू धनको
मो को डर है अति वाही दिन को।
जागे काम अनेक [illegible] हो चिंता लागे मन को,
छाए क्रोध सुध बुध बिसराये व्याकुल करे प्राननको।
मो को डर है अति वाही दिन को॥
हाहाकार सुन बाहर भीतर कष्ट होत श्रवणन को
यम के दूत देख कर सन्मुख भय उपजे नैनन को
मो को डर है अति वाही दिन को।
निर्भयराम छाड क्यों न देवो झूठा संग सबन को॥
असंग को भय नेकहू नाहीं मानो बेद वचन को॥

मोको डर है अति वाही दिन को ।

॥ पद ॥

संतों का मता निराला है।

प्राणोंकी असवारी आसन, प्राणोंकी चिंतन निदध्यासन,
प्राणों की ध्वनि बीजमंत्र है, प्राणों की गति माला है॥
संतों का मता निराला है।
ऊर्धमुनि प्राण धरेहैं ध्याना, अधमुनि प्राण करें परणामा
प्राणों का पति महादेव है, प्राणस्थान शिवाला है॥
संतों का मता निराला है॥
प्राणही जीवन प्राणही काला, प्राणनहीं में है उजियाळा
प्राणन हीं में शीतलता है, प्राणन हीं में ज्वाला है।
संतों का मता निराला है॥
प्राणन में इंजील कुराना, प्राणन हीं में बेद पुराणा।
निर्भयराम इष्ट प्राणों का, सब ज्ञानन नें आला है॥
संतों का मता निराला है॥

॥ पद ॥

प्यारे मन रन में चौकस जाना
नाम विवेक हमारा कहिये पायक परम प्रधाना
सत्य लोक है लोक हमारा अबिनाशी सुलताना

प्यारे मन रन में चौकस जाना।
तीन लोक माया ने जीते तृष्णा अति बलवाना,
साध संत अवधूत हु लूटे बाँच लेहु परवाना॥
प्यारे मन रन में चौकस जाना।
राग द्वेष सेनापति ऐसे मारें सन्मुख बाना,
अभिनिवेश अस्मिता मंतरी कठिन बडो मैदाना॥
प्यारे मन रन में चौकस जाना।
क्षमा अर्ज व दया तोष सत् पाँचों शस्त्र लगाना,
ज्ञान विमान बैठ धीरज सो निश्चय ज़ोर जमाना॥
प्यारे मन रन में चौकस जाना।
निर्भय प्राण रहें या जावें नेकहु मत घबराना,
सोहं तुझ से कहे देत हैं पायहै पद निर्बाना॥
प्यारे मन रन में चौकस जाना।

॥ होली ॥

श्याम सों मेरो नेहा लगोरी।
सास लड़ो ननदी क्यूँ न रूठो, बलमा रार करोरी,
देवरा देवरनिया जिठनिया सो बिगरो व्रजबनिता
एक ठोरी, सभी मिल लाख कहोरी,
श्याम सों मेरो नेहा लगोरी॥

साख गई जाने दो निगोडी, लाज रहो ना रहोरी,
सुख संपति की बात कहा है, धीरज बिछुर गयोरी,
प्राणं नहिं मानत मोरी॥ श्याम सों मेरो नेहा लगोरी ।
प्रेम प्रतीत टरे नहीं टारी, नीत की रीत टरोरी,
चाहे अचल मही चल जावे, सीतल चंद्र तपोरी,
भाँवें नभ टूट पडो री॥ श्याम सों मेरो नेहा लगोरी।
ज्ञानसो जान लियो हाँ लियो है, ध्यान सो देख लियो री,
निर्भय राम को जाने न दूंगी, बिन होरी खेले सखीरी,
बिधी के अंक मिटो री, श्याम सो मेरो नेहा लगोरी।

॥ पद ॥

मुझ को कहाँ देखे मूरख मैं तो तेरे पास में ।
काबे में न मसजिद में मंदिर में न गिर्जा में,
निश्चय जो कोई ढूंडे मुझ को ताय मिलूं बिश्वास में ॥
मुझ को कहाँ देखे मूरख मैं तो तेरे पास में ।
मुझसे क्या पूछे है ग़ाफिल समझके देख अगर है आकिल,
सोहं सोहं सोहं सोहं बोलत हूं हर श्वांस में ॥
मुझ को कहाँ देखे मूरख मैं तो तेरे पास में ।
श्रुति का प्रमाण ले बुद्धि सो छान ले,
मैं हीं जीव या तन के अंदर देव मैं हीं कैलाश में ॥

भुझ को कहाँ देखे भूरख मैं तो तेरे पास में।
सतगुर तोहि सीख देत निर्भय क्यूं नहि मानलेत,
जैसा हित स्वामी में राखे तैसा ही रख दास में।
भुझ को कहाँ देखे भूरख मैं तो तेरे पास में॥

॥ पद ॥

गगरिया मोरे सिर की उतारी लो न जात।
घर तो है दूर गागर सिर भारी कैसे करूं मोरा जीया घबरात॥ गगरिया मोरे सिर की उतारी लो न जात।
निशि दिन रिमझिम मेहा बरसे। निपट अंधेरा नहीं सूझे बाट॥ गगरिया मोरे सिर की उतारी लो न जात।
किस बिध चलूं राह रपटीली। फिसल जात नहिं पग ठहरात॥ गगरिया मोरे सिर की उतारी लो न जात।
केवल निर्भय और कछु नाहीं, तेराही भ्रम तुझे भरमात॥
गगरिया मोरे सिर की उतारी लो न जात॥

॥ लावनी ॥

जिस की रौशनी है लैलो निहार।
वो चश्मे यार में जलवा है [illegible]
चींटी से ब्रह्मा तक जितने जीवों [illegible]
चश्मे ग़ौर से देखा सरताए [illegible]

जिलाती मुरदोंको हरबार ग़ज़ब रफ़्तारमें जलवाहै जी।
जिस की रौशनी है लैलो निहार।
वो चश्मे यार में जलवा है जी ॥
दिलावेज़ मीठी मीठी लहरें चढ़ती हैं यार।
तनसे जान खिंचतीहै रसभरे बोल सुनके सरकार ॥
बेखुदी के होते आसार, ग़ज़ब गुफ़्तारमें जलवा है जी,
जिस की रोशनी है लैलो निहार।
वो चश्मे यार में जलवा है जी ॥
परतौ फ़िग़न हो दिल में तजल्ली तारी की मिट जाय।
कहे सुने कुछ बन नही आवे नूर ही नूर दिखाय ॥
चश्मये नूर नूरुल अनवार, ग़ज़ब रुख़सारमें जलवाहै जी,
जिस की रोशनी है लैलो निहार।
वो चश्मे यार में जलवा है जी ॥
व यहीं होजाता है तालिब को देख मतलूब।
त्राच्य निर्भय है आगे चुप हो जाना खूब ॥
खफ़ी इज़हार ग़ज़ब दीदारमें जलवा है जी,
की रोशनी है लैलो निहार।
यार में जलवा है जी ॥

—

॥ पद ॥

जैसे तैसे गुजर जायगी यूं हीं तेरी गुजरान वे।
चिंता कर कछु हाथ न आये, होनहार ना मिटे मिटाये,
सावधान हो हरिसुमरन कर, तज दे मान अपमान वे ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी यूं हीं तेरी गुजरान वे।
भोर होत चल देना खासा, रैन मात्र कितहूं कर बासा,
क्या मंदिर क्या बाग़ बग़ीचा, झोपड़ी क्या मैदान वे ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी यूं हीं तेरी गुजरान वे।
शरीर की हो जा रखवाली, वस्त्र मात्र मिलजाये ख़ाली,
क्या मलमल क्या गजी अधोतर क्या कंबल अलवानवे॥
जैसे तैसे गुजर जायगी यूं हीं तेरी गुजरान वे।
भोजन जो कुछ मिले सो खावे, प्राणनका पालन होजावे,
चरा चबेना साग पात क्या, क्या मेवा मिष्टान वे ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी यूं हीं तेरी गुजरान वे।
अष्ट प्रहर निरंतर रटना, हरी भजन से कभी न हटना
और प्रमाण सभी बातों का, या को नहीं प्रमाण वे ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी यूं हीं तेरी गुजरान वे।
नाम रूप गुणतें है न्यारा, सत् चित् आनंद रूप हमारा,
निर्भय राम राम की सौगंद, यही तो निर्मल ज्ञान वे ॥

जैसे तैसे गुजर जायगी यूं हीं तेरी गुजरान वे।

॥ पद ॥

श्रवण करो चारो वेद की बानी।
ब्रह्मा विष्नु महेश की अनुभव सनकादिक की मानी,
तत्वं असी महावाक्य ने अभेदता दिखलानी।
जो वो है सोई तू है या में श्याम वेद प्रमानी॥
श्रवण करो चारों वेद की बानी।
ब्रह्मा बिष्नु महेश की अनुभव सनकादिक की मानी,
अहं ब्रह्म अस्मि श्रुती ने मेरी भूल भुलानी।
यामें संशय कोई मत करना यजुर्वेद बतलानी॥
श्रवण करो चारों वेद की बानी।
ब्रह्म विष्नु महेश की अनुभव सनकादिक की मानी,
प्रज्ञानं आनंदं ब्रह्म हूं, मोहे कछु लाभ न हानी।
ऋग वेद में साफ़ लिखा है, निश्चय बड़ी पुरानी॥
श्रवण करो चारों वेद की बानी।
ब्रह्मा बिष्नु महेश की अनुभव सनकादिक की मानी,
अयं आत्मा ब्रह्म पुकारत, बेद अथर्वन जानी।
निर्भयराम यामें नहीं संशय ब्रह्म हीं है ब्रह्मज्ञानी॥
श्रवण करो चारों वेद की बानी।

ब्रह्मा विष्नु महेश की अनुभव सनकादिक की मानी॥

॥ पद ॥

राम प्राण चिंता मोहे अष्ट प्रहर लागी।
हृदय बीच मचत फाग, नासिका के अग्र भाग,
रवी चंद्र सखियन में बुद्धी अनुरागी॥
राम प्राण चिंता मोहे अष्ट प्रहर लागी।
वाह्यंतर ध्यान छोड़, सखियन सों नेह तोड़,
पीतम के प्रेम रूप रंग सुरत पागी॥
राम प्राण चिंता मोहे अष्ट प्रहर लागी।
कुलवंती लाज भरी, पिया की सेज सोय रही,
झपके नैन मौन भई, आप ही आप जागी॥
राम प्राण चिंता मोहे अष्ट प्रहर लागी।
उदासीन वृत्ति गहे, बोले और न मौन रहे
मिला और न दूर कहे, निर्भय वैरागी॥
राम प्राण चिंता मोहे अष्ट प्रहर लागी।

॥ पद ॥

केशव बिधना रची सोई हुइ है।
तुम से नाहीं छिपी करुणा निधि, औरन तें कहा कहिये,
केशव बिधिना रची सोई हुइ है॥

नाम मात्र माया की रचना, क्या त्यागे क्या गहिये।
केशव बिधिना रची सोई हुइ है ॥
तुम्हरी शरण यही सब कुछ है, इतर कछु नहीं चहिये ।
केशब बिधिना रची सोई हुइ है ॥
निर्भय प्रीति की रीत कठिन है ,जान बूझ चुप रहिये।
केशव बिधिना रची लोई हुइ है ॥

॥ पद ॥

आली घनश्याम के संग चलो,
अब सोच कहा जो भई सो भई।
बइयाँ मरोरी चुरियाँ फोरी, चोली मसक मसक करी चोरी। माँखन खाय मटकिया तोरी, चूनर झटक दई सो दई ॥ आली घनश्याभ के संग चलो,
अब सोच कहा जो भई सो भई॥
घर में ननदी सास लरत हैं, वाह्य परोसन नाम धरत हैं ब्रजबनिता सब हास्य करत हैं, जानेदो लाज गई सो गई
आली गनश्याम के संग चलो,
अब सोच कहा जो भई सो भई।
रैन अँधेरी बुंदियन घेरी, नइया नहीं नदिया अति गहरी पवन चलत सनसन चहुंओरी, दामिनि दमक रही सोरही

आली घनश्याम के संग चलो,
अब सोच कहा जो भई सो भई।
धीर धरो चिंता को टारो, निर्भय टेर टेर यही हारो,
घट घट वाही बंसी वारो, चुप होय रहोजो कहीसो कही॥
आली घनश्याम के संग चलो,
अब सोच कहा जोभई सो भई।

॥ लावनी ॥

यूँ हीं काशी प्रयाग में भूला फिरे,
तुझे घर की तो यार ख़बर ही नहीं।
वो तो घट ही के पट में निहाँ है मियाँ,
कुछ दूर दराज़ सफ़र ही नहीं।
कोई काबे को जाता है कहता हुवा,
यहाँ नूर का तो मज़हर ही नहीं।
चलो देखें मदीने को कोई कहे,
यहाँ ज़ाते हक़ीक़ी का घर ही नहीं।
कोई मक्के को जाता है कहता हुवा,
कहीं और हक़ आता नज़र ही नहीं।
चलो देखें द्वारिका कोई कहे,
किसी और जगह मिलें हरि ही नहीं।

हर संग में नूर निहाँ उसका ,
कुछ तूर पे ख़ास हसर ही नहीं ।
वो तो घट ही के पट में निहाँ है मियाँ,
कुछ दूर दराज़ सफ़र ही नहीं ॥
उसी नूर की सारी है जलवे गरी ,
बजुज़ उसके तो और किधर ही नहीं ।
हर ज़र्रे में ज़र्रे फ़िशाँ है वोही ,
कोई और इधर या उधर ही नहीं ।
वो ही चौदह तबक़ में समाया हुवा,
तेहि उस्से कोई पैकर ही नहीं ।
उलझाये जहाँ का है ज़िक्र यही,
वो ही हक़ है अगर या मगर ही नहीं ।
है अज़ों समा पे वो एक सिफ़त,
असग़र ही नहीं अकबर ही नहीं ।
वो तो घट ही के पट में निहाँ है मियाँ,
कुछ दूर दराज़ सफ़र ही नहीं ॥
ईसाई में गो ईसाई सा है ,
ईसाई वो ता महशर ही नहीं ।
इसलाम में गो इसलाम सा ,
बांधे दीन की कोई सिपर ही नहीं ।

हाँ हिंदू में हिंदू सा देख पड़े,
वले हिंदू पने का असर ही नहीं ।
हर ज़ात में ज़ात उसी की है,
पर ज़ात की उसको खबर ही नहीं ।
वहदूला शरीक़ सिफ़त उसकी,
कभी उस का हुवा हमसर ही नहीं ।
वो तो घट ही के पट में निहाँ है मियाँ,
कुछ दूर दराज़ सफ़र ही नहीं ॥
वोह तो इल्म ही इल्म का दायरा है,
कहीं उसका कुतर या वतर ही नहीं ।
उसे नूर ही नूर समझ दिल में,
अख़तर ही नहीं ख़ावर ही नहीं ।
तू तो शब्द से रास्ता बूझ ले कुल,
हक़ और कोई रहबर ही नहीं ।
हाँ सुरत का साथ न छोड़ कभी,
हक़ और कोई यावर ही नहीं ।
निर्भय हर स्वाँस में बोलता है,
सोहं सोहं मुनकिर ही नहीं ।
वो तो घट ही के पट में निहाँ है मियाँ,
कुछ दूर दराज़ सफ़र ही नहीं ॥

॥ पद ॥

बागों मत जा तेरी काया में गुलज़ार ।
सूर्य मुखी चंद्र मुखी फूली, खिल रही अजब बहार ॥
बागों मत जा तेरी काया में गुलज़ार ।
चेतन अंग सुगंध बसाये, झोंके खात बयार ॥
बागों मत जा तेरी काया में गुलज़ार ।
मुक्त कली लागी है ज्ञानसों, गलका बना लियो हार ॥
बागों मत जा तेरी काया में गुलज़ार ।
हरी बेल कहीं सूख न जावे, निर्भय प्रेम जल डार ॥
बागों मत जा तेरी काया में गुलज़ार ।

॥ पद ॥

मैं कैसे करूं कहो बीर श्याम नहीं आवत हैं,
आवन आवन कह गये री, हेरत रही हिराय ।
क्या जाने कब आयँगे, हरि घर अँगना न सुहाय ॥
मैं कैसे करूं कहो बीर श्याम नहीं आवत हैं,
सर्बस अपना त्याग के मैं, हरि सों कीनी प्रीति ।
तौ भी हरि आवत नहीं री, कौन देशकी रीति ॥
मैं कैसे करूं कहो बीर श्याम नहीं आवत हैं,
लाज गई धीरज गयो, प्रानन की पति नाहिं ।

हरि रीझत नहीं अय सखीरी, याको कौन उपाइ,
मैं कैसे करूं कहो बीर श्याम नहीं आवत हैं ।
जिन ढूंढा तिन को मिले, निर्भय राम जरूर,
आज नहीं तौकल सहीरी, चिंता को कर दूर ॥
मैं कैसे करूं कहो बीर, श्याम नहीं आवत हैं ।

॥ ग़ज़ल ॥

तू जिसके लिये घर से हैरान निकला ।
वो तेरे तो घर ही में नादान निकला ॥
इलाही मेरे दिल का अज्ञान निकला ।
तू ना आशना जान पहचान निकला ॥
जो मैंहूं सो तू है जो तू है सो मैंहूं ।
तेरा कहना सच्चा मेरी जान निकला ॥
किसी से वो मिलते नहीं और न बोलैं ।
यह ज़ाहिर परस्तों का बोहतान निकला ॥
टटोला कफ़न शाहो पीरो गदा का ।
बजुज़ उस्तख्वाँ कुछ न सामान निकला ॥
न लूंगा कभी देके दिल चाहे कुछ हो ।
मेरा उनसे यह अहदो पैमान निकला ॥
ज़िवह करते ही हाय कतरा प रोंको ।

तड़पने का कुछ भी न उरमान निकला ॥
तेरे घरसे पीकर पियाला जो निकला ।
वो मस्तान निकला या सुनसान निकला ॥
किया उनको रागि़ब वो नग़मा सुनाया ।
यह मुर्गें दिल अपना खुशइलहान निकाला ॥
वो हरबुत में नूरे खुदा देखता है ।
मैं समझाथा हिंदू मुसलमान निकला ॥
जिसे पहले समझेथे आराम निर्भय ।
उसे अब जो देखा तो ख़लजान निकला ॥

॥ ग़ज़ल ॥

यह भारी और वो हलकी देखलो कोई रक़मलेलो ।
हैं दोनों साफ़ सौदे मौत लेलो चाहे ग़म लेळो ॥
दिलो जाँ दीनो ईमाँ बेचता हूं यार तुम लेलो ।
तुह्मारी एक नज़र पर मोल सबका है ख़तम लेलो ॥
वसीयत है यही यारो लिखो कागज़ कलम लेलो ।
मेरा लाशा उठाना तब जब उनको साथ तुमलेलो ॥
गगन पर पहुंच कर कहतेहैं हज़रत इश्क यूंमुझसे ।
अब आपहुंचे हैं कूए यार में बेहतर है दम लेलो ॥
मरी शरमो हया सबरो क़रारो आबरू साहब ।

तुझें पट्टा गुलामी का लिखे देते हैं हम लेलो ॥
अज़ीज़ो जज़्बे दिल लेजायगा खुदकुए क़ातिलको ।
बराये नाम लाशा दोश पर दो दो क़दम लेलो ॥
तमन्ना मिटगई बिलकुल तो अबवोह मुझसे कहतेहैं ।
जमी से लामका तक जितना है जाहो हशम लेलो ॥
है कब मुमकिन लबों का लेके बोसा कहदूं गैरोंसे ।
में मुंह सीलूंगा लेकर पहलेतुम कौलो क़सम लेलो ॥
कहा करते हैं बेख़बरी जिसे निर्भय कोअय जानी ।
वोही देदो खुदा के वास्ते वहमो फहम लेलो ॥

॥ होली ॥

मोरी नई चुनरिया बोरदई, बडो होरी को खिलैया बिहारी रे ।
प्रेम को रंग दृगन बिच भरभरसैनन मारे पिचकारी रे,
मोरी नईरे चुनरिया बोरदई, बडो होरी को खिलैया बिहारी रे ॥
कर झटको घूंघटवा खोलो चोली मसक बिगारी रे ।
मोरी नईरे चुनरिया बोरदई बडो होरी को खिलैया बिहारी रे ॥
ज्ञान गुलालध्यान सों मलकर लिपट जात देदे तारीरे

मोरी नई चुनरिया बोरदई बडो होरी को खिलैया बिहारी रे ॥
अपनी करत सुनत कछु नाहीं निर्भय भयो बनवारीरे ।
मोरी नईरे चुनरिया बोरदई बडो होरी को खिलैया बिहारी रे ॥

॥ कवित्त ॥

आये कछु हरष नहीं, जाये कछु शोक नहीं, बडो ही निर्द्वंद्व हूं, समझने की बात है। देह नेह घेरे नहीं, लक्ष्मी के चेरे नहीं, सुत बनितादि मेरे नहीं, हरि सों कछु बसात है ॥ लोक की रीति है, मान ने की प्रीति है, हार है न जीत है, जात है न पांति है। निर्भय यही ज्ञान है, सत्य भगवान है और कहा ज्ञानी के सींग जमजात है ॥

॥ कवित्त ॥

प्रेम की सेली पड़ी, ध्यान का आसा है, लगन की अगन में जियरा अति जरत है। बिरह की भस्म मली प्रानन तें अटकी है, छिन हूं घनश्याम बिन, कल नाहीं परत है ॥ लाज गई धीर गयो, बुद्धि मन शरीर गयो, आपा बिसरायो, काळहूँ सों ना डरत

है । सर्ब का बियोग है, निर्भय यही जोग है, और कहा जोगी, कुछ जहर खा मरत है ॥

॥ कबित्त ॥

क़िस्मत से झगड़ना नहीं, साईं तें लड़ना नहीं, मरने से डरना नहीं, क़िस्सा तमाम है। तेरा राम तेरे माँह, यामें कछु संशय नाँह, तेरा साही रूपहै, तेरा ही हम नाम है ॥ राम ही के रूप सभी, राम हीके नाम सभी, निर्भय राम तुमको अगर, इसमें कलाम है । हिरदे की ओटमें, प्रेम की चोटमें, झाँक तो देख ज़रा, बैठा घनश्याम है ॥

॥ कबित्त ॥

अहँ ब्रह्मास्मी, प्रथम दृढ़ निश्चय करि, इदं सर्बं अहँ एकं पुनि सत्त मानियें । बासुदेव सर्ब मिदं, भेदो नास्ति वास्तवं, अहं त्वं जीव ईश, कल्पना न आनियें ॥ अचल अनँत सम, सत्‌चित् आनंद घन, अद्वितीय पूरण ब्रह्म, अनुभव रूप जानियें ॥ तत्व का ज्ञान यही, आत्मा का ध्यान यही, निर्भय राम आप को आप पहचानियें ॥

॥ ग़ज़ल ॥

जिस दिन से मन, तुह्मारे मनन से निकल गया ।
कांटों में फंस रहा है चमन से निकल गया ॥
झोका सा एक हवा का तो सन से निकल गया ।
क्या बोलता था, कौन बदन से निकल गया ॥
पहुंचा कहां ख़याल, गगन से निकल गया ।
आज़ाद होगया है, जतन से निकल गया ॥
आज़िम हूं वस्फ़ का, में किसी शह सवार के ।
सारा ख़याल आगे कथन से निकल गया ॥
में एक ही अनेक हुवा, दूसरा नहीं ।
ख़दशा दुइ का उनकी कहन से निकल गया ॥
मजनू हुई है लैला किसे ढूंढती है तू ।
मुद्दत हुई है क़ैश तो बन से निकल गया ॥
खिचवावो खाल चाहे मुझे खींचो दार पर ।
आशिक़ हूं तेरा अब तो दहन से निकल गया ॥
जोशे जनूं में शौक़ ग़ज़ब दीद का हुवा ।
दीवाना क़ैद ख़ानये तन से निकल गया ॥
हस्ती के लोग कहते हैं मुझको अदम में देख ।
यह बावला बड़ा है वतन से निकल गया ॥

मुझ को मिला के ख़ाक में क़ातिल ने यूं कहा।
ये शख़्श साफ़ आवा गवन से निकल गया॥
उनका निज़े में भी न उठा रुख़ से जब नक़ाब।
मैं भी छिपा के मुंह को कफ़न से निकळ गया॥
पीकर शराबे शौक़ को वो मस्त हो गया।
दुनियाँ के निर्भय सारे चलन से निकल गया॥

॥ ग़ज़ल ॥

कहाँ खोले हैं साहब हैं बंधे पर देखते जाओ।
तड़पताहै ये बिसामिळ फिर भी क्योंकर देखते जाओ॥
गला काटे है रुक २ कर सितमगर देखते जाओ।
है लुतफ़ो रहम का ख़ंजर में जौहर देखते जाओ॥
फ़लक पर चाँद तारे का गुमा है एक आलम को।
तुम अपनी एकपटी नूरानी चादर देखते जाओ॥
तजल्ली से तेरी रौशन है सरतापा तने इन्साँ।
चमकता कान में नायाब गौहर देखते जाओ॥
तुह्मारा नाम है ख़ाली मता ये दीनो दुनियाँ में।
अगरहै आप को कुछ शक मेरा घर देखते जाओ॥
मिटा नामों निशाँ तीनोंका ज़ख़्मोंसे ज़रा क़ातिल।
मेरे सीने को पहलू को जिगर को देखते जाओ॥

मैं फ़ौरन जी उठूंगा अै मसीहा दम तेरे सदक़े ।
मेरे लाशे को हाँ ठोकर लगाकर देखते जाओ ॥
मिटाती है दुई वहदत का रंग लातीहै अै ज़ाहिद ।
मये उलफ़त की प्याली एक पीकर देखते जाओ ॥
मैं मरजाताहूं क्योंकर मरके जीजाताहूं फिर क्योंकर ।
चढाकर पहले अबरू पीछे हंसकर देखते जाओ ॥
हुवा करते हैं निर्भय किस तरह यह शोक़है जिनको ।
अनल हक़ इसमें आज़म है ये पढ़कर देखते जाओ ॥

॥ लावनी ॥

जिसकी ख़ातिर हम दुनियाँ की राहतो ग़म को भूल गये । वुह दिल लेकर हमारा दिल से हम को भूल गये ॥ उसके कूंचे के सिवा और जा रखना क़दम को भूल गये । खि़लदे वरीं को इरम को दैरो हरमको भूल गये ॥ उसके नामकी यादमें पढना इसम आजमको भूलगये । होशो खि़रदको अक़्लको वहमो फ़हम को भूलगये ॥ जिसके दममें आके सरासर अपनेदम को भूल गये । वोह दिल लेकर हमारा दिल से हम को भूल गये ॥ उसकी तर्ज़ सीने में लिखकर तरज़े रक़म को भूल गये । मतलब मज़मूं इबारत काशि-

शे क़लम को भूल गये॥ उसका तसव्वुर करके और सब क्रिया करम को भूल गये। निर्गुण सगुण भाव को निगम आगम को भूल गये॥ जिस की तजल्लीओ नूर देख हस्तिओ अदम को भूल गये। वो दिल लेकर हमारा दिल से हम को भूल गये॥ ख़ाक उसके दर की मलकर सबजाहो हशम को भूल गये। शाही गदाई नबूवत दामो दिरम को भूल गये॥ उसकी लगन में फाड़ गरीबाँ ह्या शरम को भूल गये। सबरो तहम्मुल क़रारो कौलो क़सम को भूल गये॥ ख़याल में जिसके बिलकुल हैयते आदम को भूल गये। वो दिल लेकर हमारा दिल से हम को भूल गये॥ उसकी निगाहे सिहर देख हरेक आलम को भूल गये। जुलमों सितम को क़हर को लुत्फ़ो करम को भूल गये॥ उसकी मधुर बानी सुनकर स्वर ताल और सम को भूल गये। बीन पखावज बिहाग एमन सरगम को भूल गये॥ निर्भय राम जिनकी ख़ातिर हम सारे भ्रम को भूल गये। वोह दिल लेकर हमारा दिल से हमको भूल गये॥

॥ लावनी ॥

जब आशक़ पर आशक़ वो सनम होता है।
दोनों का रुतबा एक रक़म होता है॥
दरपये क़त्ल ले तेग़े दुदम होता है।
आखों से सर तसलीम को ख़म होता है॥
यह कज फ़हमी है उनका सितम होता है।
गो ज़ाहिर मैंसर तन से क़लम होता है॥
मैं तूका झगड़ा जहाँ ख़तम होता है।
दोनों का रुतबा एक रक़म होता है॥
वहदत की राह पर जिसका क़दम होता है।
लाखों मैं एक ख़ालिक़ की क़सम होता है॥
मतलूब और तालिब का वहम होता है।
यकताई का जिसदम आलम होता है॥
क्या कहूँ मैं जैसा जाहो हशम होता है।
दोनों का रुतबा एक रक़म होता है॥
नौ द्वार छोड़ प्रवेश दशम होता है।
जहाँ मन बाणी का ज़रा न गम होता है॥
ना गिरजा है ना दैरो हरम होता है।
माया का खेल दरहम बरहम होता है॥

जब ध्यय रूपे हो ध्याता सम होता है ।
दोनों का रुतबा एक रक़म होता है ॥
हम जुबाँ तभी अपना महरम होता है ।
जब दम अपना उसका हमदम होता है ॥
अपनी करनी और उसका करम होता है ।
हम दम महरम हो दम एक दम होता है ॥
निर्भय हो बेश वोह ज़रा न कम होता है ।
दोनों का रुतबा एक रक़म होता है ॥

॥ ग़ज़ल ॥

तिताड़ा ॥ ताल १० मध्य दिन वा रात्री

मेरा दिल रूठ गया मुझ से मनादो कोई ।
कहीं बदनाम न हो जाय बुलादो कोई ॥
मुझ को वोह भूल गये याद दिलादो कोई ।
उनको मैं याद करूं नाम बतादो कोई ॥
लोग कहतेहैं कि हम आपको पहचानते हैं ।
आप कहतेहैं किसे मुझ को दिखादो कोई ॥
यूँ तो हाँ याद तेरी दिलसे नहीं जाने की ।
खुदको खुद आप भुलावे तो भुलादो कोई ॥
तुमको अपनासा करूँ आपसा बनजाऊँ मैं ।
ऐसी तदबीर मेरी जान सिखादो कोई ॥

क्याबुरा ख्वाबहै डरडरके वोहचौंक उठतेहैं ।
किसी माकूल बहाने से जगादो कोई ॥
अपनी सूरतपै कहींआप न आशक़ होजाय ।
चुपके आईना मुकाबिल से हटादो कोई ॥
निर्भय होजाऊँ मिटै दिलसै दुईका खदशा ।
एक प्याली मये वहदत की पिलादो कोई ॥

॥ पद ॥

आतमको सर्व आनंद मूढसुख बिषयन मैं जाने ॥
नर सिंह देखकर कोसौं भागै इतना भयमाने,
और उसी सिंहको निरख सिंहनी मनमैं हरषाने ।
आतमको सर्व आनंद मूढसुख बिषयन मैं जाने ॥
परदेससे आय जब मित्रमिलै कैसा सुख उपजाने,
फिर सुखतो सुख नर उसीमित्रको निरखत उकताने ।
आतमको सर्व आनंद मूढसुख बिषयन मैं जाने ॥
जल हालत हालत घटमैं तोलौं नाही ठहराने,
पूरण मुखका प्रतिबिंब कदाचित नाहीं दरशाने ।
आतमको सर्व आनंद मूढसुख बिषयन मैं जाने ॥
मनकी चंचलता मेट आत्मानँद को पहचाने,
जो होनी होयेसा होय निर्भय भय काहेको आने ।

आतम को सर्ब आनंद मूढ सुख बिषयन मैं जाने ॥

॥ दोहा ॥

बोध साम शम पुष्पतैं, पूज आतमा राम ।
निर्भय सुख होगा तुझे, निश्चय आठों जाम ॥
बोध पुष्पका फल यही, निर्भय हो अभि ध्यान,
साम पुष्प की अर्चना, करे योजना ज्ञान ॥
निर्भय राखो प्रेमसे, शम स्वरूप सरफूल,
तत्व भाव हो जायगा, रहे न किंचित् भूल ॥

॥ दोहा ॥

जैसें कामीनर करैं रती युक्त ब्यवहार,
निर्भय तूभी काम कर आतम दृष्टी न टार ॥
जिमी क्रीड़ा करत हैं ग्रहमैं नर और नारि,
निर्भय ऐसही ब्रह्मका क्योंनहीं करत बिचारि ॥
जिमी नारिसौं करत है नर निर्भय हो भोग,
सुख चाहे तौ कर योंहीं आतम सँजम जोग ॥
जिमी भोग के अँतमें होत बिषय आनंद,
निर्भय ऐसे जतन सों भासे स्वरूप अखँड ॥

॥ दोहा ॥

सर्गुण निर्गुण ब्रह्मका एक नाम ऊँकार,
नामी नाम अभेद है निर्भय कहे पुकार ॥
तीन मात्रा सगुण हैं अर्द्ध निरँजन जान,
निर्भय सब के मेल को अपर ब्रह्म पहचान ॥
सोहँ पद का वाच्य है जीव ईश का रूप,
दोनों का लक्ष एक है चेतन तत्व अनूप ॥
जीव ईशकी एकता याही पद में हो,
निर्भय ब्यँजन छोड़दो स्वर ही स्वर गहलो ॥
स्वर ब्यँजन का ज्ञानहै जड़ चेतन का ज्ञान,
माया सो ब्यँजन कहें शुद्ध स्वरन को जान ॥
केवल स्वर ही स्वर भजो ब्यँजन से रहो दूर,
परम ब्रह्म ऊँकार है घट घट में भरपूर ॥
बिना नाम तुम ही कहो कैसें होवे ज्ञान,
निर्भय होकर नाम का धरो रैन दिन ध्यान ॥
रटत रटत ही नाम के मिथ्या भ्रम नसाय,
अर्थ प्रगट होजात है निर्भय राम दृढाय ॥

॥ पद ॥

कितेक दिनन को ऊधम ठावे ।

कोठी बँगला कोट तवेला, ऊँचे ऊँचे महल चिनावे ॥
कितेक दिनन को ऊधम ठावे ।
केला सँतरा चँपा चमेली, फल फूलों के बाग लगावे ॥
कितेक दिनन को ऊधम ठावे ।
नये नये रथ हाथी अँबारी, बग्गी घोडे मोल मंगावे ॥
कितेक दिनन को ऊधम ठावे ।
भूषण पहने रतन जड़ाऊ, जरीवफ्त के बस्त्र सिलावे ॥
कितेक दिनन को ऊधम ठावे ।
पान इलायची केसर मेवा, नाना रस पगे भोजन खावे ॥
कितेक दिनन को ऊधम ठावे ।
विद्या बल संपति परवारा, मैं मेरी कर धूम मचावे ॥
कितेक दिनन को ऊधम ठावे ।
निर्भय राम सांचही मानो, कछुहू मूरख साथ न जावे ॥
कितेक दिनन को ऊधम ठावे ।

॥ पद ॥

जहां श्याम तहां चलो चल हैं सखी, या हमें ना सुहावत सूनी अटा ।
खान पान भूषण बसन निंदया जुबना काम,
कछुहू नीका ना लगे कैसी करूँ मोरे राम ॥

जहां श्याम तहां चलो चल हैं सखी, या हमें ना सुहावत सूनी अटा ॥

मैं मैं कहना छोड़दो कृष्ण कृष्ण कहो टेर,
मैं मैं सुनकर श्याम ने लीनी चितवन फेर ॥
जहां श्याम तहां चलो चलहैं सखी, या हमें ना सुहावत सूनी अटा,

बांधव आतम ईश धन गुरू सखा जग मांहि,
मेरे तो छुट कृष्ण सौं और दूसरा नांहि ॥
जहां श्याम तहां चलो चल हैं सखी या हमें ना सुहावत सूनी अटा ।

तनमें मनमें दृगन में प्राणन में घनश्याम,
पूरण रहो प्रेम में निर्भय आठो जाम ॥
जहां श्याम तहां चलो चल हैं सखी, या हमें ना सुहावत सूनी अटा ।

॥ पद ॥

हमारे घर आये हैं नँदलाळ ।
काळी कटि चूनर काहूकी मुख लिपटाये गुलाळ ॥
हमारे घर आये हैं नँदलाल ।
गल बिच कंगन कर बिच पायल पग बैजँती माल ॥

हमारे घर आये हैं नँदलाल।
लाओ सखी वारूं शोभा पर गज मोतियन भर थाल॥
हमारे घर आये हैं नँदलाल।
निर्भय राम चरण बलिहारी नई अनोखी चाल॥
हमारे घर आये हैं नँदलाल।

॥ पद ॥

मन चेत नहीं पछतावेगा।
जा तनमें जा धनमें भूला यहीं पड़ा रहजावेगा॥
मन चेत नहीं पछतावेगा।
झूंठे मित्र कुटुंभ स्वारथ को कोऊ काम न आवेगा॥
मन चेत नहीं पछतावेगा।
भजता क्यों नहीं नंद नँदनको जो तोहे पारलगावेगा॥
मन चेत नहीं पछतावेगा।
जा दिन गहरी निंदया सोवे निर्भय कौन जगावेगा॥
मन चेत नहीं पछतावेगा।

॥ पद ॥

पड़ी मोहे कैसी अद्भुत बान।
जा अकाश को अंत कहूं नहीं निर्गुण लाभ न हान,

वाको निरखत निरखत निशिदिन नैना नाहिं अघान ॥
पड़ी मोहे कैसी अद्‌भुत बान ।
रूप अरूप है नाम अनामी कैसे हो अनुमान,
मोको तो अचरजसा लागे मनवां बडो ही लुभान ॥
पड़ी मोहे कैसी अद्‌भुत बान ।
बतलाऊं दिखलाऊं क्योंकर अनुभव है प्रमान,
मन बाणी की गम नहीं है निर्बिशेष निर्बान ॥
पड़ी मोहे कैसी अद्‌भुत बान ।
आप मरे कुल जगको मारे निर्भय तभी दृढान,
मूरख या पद को नहीं पावें पावेंसँत सुजान ॥
पड़ी मोहे कैसी अद्‌भुत बान ।

॥ पद ॥

जतन बिन मृगोंने खेत उजाड़ा ।
पांच मिरग पचीस मिरगनी सँगलिये तीन चिकारा,
दिनधौली अँदर घुस आये फांध फांध कर बारा ॥
जतन बिन मृगोंने खेत उजाड़ा ।
इत उत डोलत कूदत फांदत भय नहीं करत गँवारा,
मेंड सभी तोडीं क्यारिन की उलट पुलट करडारा ॥
जतन बिन मृगोंने खेत उजाड़ा ।

किसको को बरजे को माने अपना ही परवारा,
चुनचुन पात फूलफल खाये तिनका तलक न छाड़ा ॥
जतन बिन मृगोंने खेत उजाडा ।
अपनी सुध खेती की बुधि नहीं सगरो खेल बिगारा,
निर्भय राम कहो कैसी करोगे सोवत है रखवारा ॥
जतन बिन मृगोंने खेत उजाड़ा ।

॥ ग़ज़ल ॥

जगदीशही आपसे जीवभयो येभी सचहै वोभी सचहै,
प्रतिबिंब कहो या बिंबकहो यहभी सचहै वोभी सचहै ॥
हैंएक नहीं येलग्व बयां तेरी अक्लही काहै क़ुसूर मियां,
खुर्शीदकहो या धूपकहो यहभीसचहै वोभीसचहै ॥
ग़फलतका रूख़सेनक़ाब उठावहदतमेंहै कसरत जलवे
नुमा, बुदबुदेकहो यानीरकहो यहभी सचहै वोभीसचहै ॥
हैदोमें एकहो दोसेएक निर्भय करलो अन्वय ब्यतिरेक,
अद्वैतकहो याद्वैतकहो यहभी सचहै वोभी सचहै ॥

॥ गज़ल ॥
बिहाग॥

आदम किधर ख़याल है हक़को तो जानले ।
हम तुम हैं एक दो नहीं यहबात मानले ॥

बुद्धी से दूर मनसे अलग चित से पार हो,
चिंता दुई की छोड़दे अनुभव प्रमाणले ॥
ख़ालिक़ है तू भी मैंहूं अगर फ़र्क फिर कहां,
रचता है स्वप्न सृष्टी को मुझसे निशानले ॥
गंदला है आबे इश्क झिझकता है दिल तभी,
पीना अगर है शौको मुहब्बत से छानले ॥
खुदसे खुदा जुदा नहीं हरगिज खुदा परस्त,
कहता है रास्त हाथ में निर्भय कुरानले ॥

॥ ग़ज़ल ॥

रूप सब राम के हैं राम के हैं नाम तमाम,
दोनों आलममें यहांक्या वहां घनश्याम तमाम ॥
दीनो दुनियां के हुवे सारे सरंजाम तमाम,
आज कल खूब गुजरती है बा आराम तमाम ॥
राह तो रंज मुकद्दर से हुवा करते हैं,
हक़को नाहक़ही किया करतेहैं बदनाम तमाम ॥
बँदतहरीर करो रहनेदो तक़रीर फ़ज़ूल,
नासेहा मेरा इशारे में हुवा काम तमाम ॥
सफ़ हे दिलपे जो दिलबर की खिंचीहै तसवीर,
वोही जलवा वोही कुदरत वही अँदाम तमाम ॥

शौक़े दीदार अगर है तो बस इन आंखोंमें,
श्याम से सुभा हो और सुभासे हो श्याम तमाम ॥
मळेकुळ मौत उठो निर्भय कमर को बांधो,
आख़री तुमहीं तो लेजाते हो पैग़ाम तमाम ॥

॥ पद ॥

अब सँतजनोंका बिचारसार कहताहूँ तुझसे होशियार।
देह मलीन छिनभँगुर भाई निर्मल बुद्धि भागसों पाई,
निश्चय मानों रामदुहाई यामें कछु नहीं सार यार ॥
अब सँतजनोंका बिचार सार कहताहूँ तुझसे होशियार।
चेतन देव आत्मा सारा नाम रूप और गुणसे न्यारा,
यामें किसका कहो इजारा आपही आपहै वार पार ॥
अब सँतजनोंका बिचार सार कहताहूँ तुझसे होशियार।
मिथ्याराग द्वेष मनमाना साक्षी निजस्वभाव नहींजाना,
जिनजाना तिन नाहींमाना उदासीनभये करबिचार ॥
अब सँतजनोंका बिचार सार कहताहूँ तुझसे होशियार।
वृथा जीवन मिथ्या मरना बँधन नहीं मुक्ती क्याकरना,
निर्भय हो काहेको डरना समझावत हूँ बार बार ॥
अब सँतजनोंका बिचार सार कहताहूँ तुझसे होशियार।

॥ पद ॥

फिरे मतवारा किस धुन में भजलेरे श्रीनँद नँदन
को सोचसमझ मनमें ।

कबहू रंक राव कभू कीनो भूल रहा धन में,
या मायाका रँग अनोखो बदले छिन छिन में ॥
फिरे मतवारा किस धुन में भजलेरे श्रीनँद नँदन
को सोचसमझ मन में ।

माटी फूली पवन सों हाँ कछु नहीं या तन में,
जानत है पर मानत नाहीं अँधरो जोबन में ॥
फिरे मतवारा किस धुन में भजलेरे श्रीनँद नँनद
को सोचसमझ मन में ।

कभहु प्रीति सुतन सों होवे रतिकभु कामन में,
इनसे बचना बडो कठिनहै बस करें नैनन में ॥
फिरे मतवारा किस धुन में भजलेरे श्रीनँद नँदन
को सोचसमझ मन में ।

सहसबाहु दशबदन आदि नृप अजय बीर रनमें,
तिनको काल कूरने खायो बातन बातन में ॥
फिरे मतवारा किस धुन में भजलेरे श्रीनँद नँदन
को सोचसमझ मन में ।

जैसाही घरमें रहना है तैसाही बन में,
निर्भय राम भेद कछु नाहीं निर्गुण सर्गुन में ॥
फिरे मतवारा किस धुन में भजलेरे श्रीनँद नँदन
को सोचसमझ मन में।

॥ लावनी ॥

करदेखा साबित हमने सबके बयानसे पासहै वो।
दूर जिसे बतलाते हो देखो तो आनके पासहै वो ॥
पहले तो बिलयकीन हो देखाहै मानके पासहै वो।
फिर पुराण देखे तो देखा हरएक पुराणके पासहै वो ॥
निगम आगम अँजील देखी देखा कुरानके पासहै वो।
गीतामें यही साफ़ बचन देखे भगवानके पासहै वो ॥
प्रमाणों कर देखा तो देखा हरएक प्रमाणके पासहै वो।
दूर जिसे बतलाते हो देखोतो आनके पासहै वो ॥
भली भांत यही देखलिया सतगुरुसे छानके पासहै वो।
स्वरूपसे लामकां मगर हरएक मकांनके पासहै वो ॥
ख़ाक बाद आबो आतिशके आसमानके पासहै वो।
दूरकिसी शयसे नहीं मुतलक़ कुल जहानके पासहै वो ॥
प्रत्यक्ष अनुभव हुआ कियादृढ निश्चय ठानके पासहै वो।
दूर जिसे बतलाते हो देखोतो आनके पासहै वो ॥

क्या हिंदू क्या ईसाई क्या मुसलमानके पासहै वो।
जितने पँथ आश्रम जितने सबमें ईमानके पासहै वो॥
दिळो जिगर पहलुवो कमर सीनेके कानके पासहै वो।
हाथ पांव पिंडली जानू बाजू जुवानके पासहै वो॥
देखा बचश्में ग़ौर तो हरदम प्राण अपानके पासहै वो।
दूर जिसे बतलाते हो देखो तो आनके पासहै वो॥
गुमान कर देखा तो यही देखा गुमान के पासहै वो।
ध्यानसे पहचाना तो यही पहचाना ध्यानके पासहै वो॥
ज्ञानसे हां जाना तो यही जानाहै ज्ञानके पासहै वो।
हुआ ग़रज तहकीक़ यही हरतरह जानके पासहै वो॥
फट न जाय चादर निर्भय मत ओढो तानके पासहै वो।
दूर जिसे बतलाते हो देखो तो आनके पासहै वो॥

॥ पद ॥

जानगया क्या बोलूँ अरे बाबा मैं जानगया क्याबोळूँ।
निर्गुण निर्बिकार निराकारा, परम पवित्रस्वरूप बिचारा,
अब जियामें यही सँशय बाढा क्या न्हाऊँ क्या धोलूँ॥
जानगया क्याबोळूँ अरे बाबा मैं जानगया क्याबोळूँ।
विभू अनँत अखँड अपारा, निश्चळसाक्षी भाव हमारा,
मैं यही सोच सोच बहुहारा क्या बैठूँ क्या डोळूँ॥

जानगया क्याबोलूँ अरेबाबा मैं जानगया क्याबोलूँ।
अक्षर निर्विकल्प अबिनाशी, सत्‌चित् आनँद अज सुख-
राशी, मुझेलगे बारबार यूँहींहांसी, क्याजोखूँ क्यातोलूँ॥
जानगया क्याबोलूँ, अरेबाबा मैं जानगया क्याबोलूँ।
आतम नित्य मुक्त निराधारा, पंचकोश त्रैदेहतें न्यारा,
निर्भय वृथा संकल्प तुह्मारा, कौनबंधा क्या खोलूँ॥
जानगया क्याबोलूँ अरेबाबा मैं जानगया क्याबोलूँ।

॥ लावनी ॥

अय दिळ तू आशक़हुआ तो क्या घबराना।
आसान नहीं है वस्ले सनम का पाना॥
मज़नू ने इश्क़ में कैसी अज़ीयत झेली,
थीं जौरोजफ़ा लाखों और जान अकेली॥
सब भूलगया वोह मये महोब्बत पीली,
यह विर्द हुवा हाय लैली लैली लैली॥
लैली पाई आपे को आप भुलाना,
आसान नहीं है वस्ले सनम का पाना॥
फरहाद ने किस दर्जे को अपनी ख्वारी की,
काटा पहाड़ तेशेसे नहर जारी की॥
कीं शर्त अदा सबही शीरीं प्यारी की,

कोई तर्ज़ न छोडी बाकी जान निसारी की ॥
मक़बूले यार होते ही हुवा रवाना,
आसान नहीं है वस्ले सनम का पाना ॥
राँझे के दिळ में जब उलफ़ते हीर समाई,
चलदिया छोड़ के ख़ेशो अक़रबा शाही ॥
की दर पै यारके बरसों तलक गदाई,
सदहा ठोकर खाखाकर हुई रसाई ॥
जब चाह हीर को हुई बना दीवाना,
आसान नहीं है वस्ले सनम का पाना ॥
मँसूरने पूरा पूरा इश्क कमाया,

दिलबर में आपको आपमें दिलबर पाया ॥
जब हक़का कलमा नोके जुबां पर लाया,
पाबँद शरह ने काफ़िर उसे बताया ॥
कहा अनल हक़ सूली पर भी नहीं माना,
आसान नहीं है वस्ले सनम का पाना ॥
हक़ इश्क़ शम्श तबरेज़ने करदिखलाया,
पढ कुंबेयज़नी मुर्दे को होश में लाया ॥
खिचवाके खाल भुस मुफ़्ती ने भरवाया,
पर हक़को आपसे जुदा नहीं बतलाया ॥

आशक़ होना है जीते जी ही मरजाना,
आसान नहीं है वस्ले सनम का पाना ॥
दीन और दुनियां दोनों की हविस छुटजावे,
दिलबर का जलवा तभी दीद में आवे ॥
हां खुदी का नामो निशान गुम होजावे,
हक़ रहजाये नाहक़ का भेद मिटजावे ॥
निर्भय हो मुक्त कहीं आना रहे न जाना,
आसान नहीं है वस्ले सनम का पाना ॥

॥ ग़ज़ल ॥

वोही हक़पै ईमान लाये हुवे हैं।
जो ख़दशा दुईका मिटाये हुवे हैं ॥
हरेक तराह दिल को मनाये हुवे हैं,
तेरे दरपै आसन जमाये हुवे हैं ॥
क़यामत के आसार छाये हुवे हैं,
वो जुलफों से मुहको छिपाये हुवे हैं ॥
वो मुखतार हैं दिललगाऐं किसीसे,
हम उनसे दिल अपना लगाये हुवे हैं ॥
वो गो हमसे आंखें चुराये हुवे हैं,
हम आंखों में उनको रमाये वहु हैं ॥

कोई रूपहो उनकी हैयत न बदले,
कुळ आलम में यकसां समाये हुवे हैं ॥
ये माना वोह दममें न आयें किसी के,
पर हम उनको दम पर चढाये हुवे हैं ॥
बग़ल में मुसल्लाह नहीं ज़ाहिदा चुप,
मये शौक़ का खुम दबाये हुवे हैं ॥
क़सम है तुझें तुम भी गर्दन न मारो,
और हम भी सर अपना झुकाये हुवे हैं ॥
वोआज़ाद निर्भय हों दुनियांसे क्योंकर,
जो हुकमें शरह से डराये हुवे हैं ॥

॥ ग़ज़ल ॥

पहले क्या सोचके उल्फ़त का बचन मुझको दिया ।
जाने जां किसलिये अब रँजो महन् मुझको दिया ॥
नाम को रूप को मैं क्या करूँ लेलो साहब ।
दोनों बेकार हैं क्या आप ने धन मुझको दिया ॥
तेरी माया ने किया मुझको बहुत ख़ाने ख़राब ।
कैसे निर्गुण हो मियां जानके मन मुझको दिया ॥
दाग़ लगजायगा इज्ज़त में तमा का बेशक़ ।
बाद मुर्दन भी किसी ने जो कफ़न मुझको दिया ॥

निर्भय किस मुंह से करे शुक्र तेरी रहमत का।
लाख इहशा किये इनसां का बदन मुझ को दिया॥

॥ पद ॥

जतन सों ओढो जी चादर झींनी।
पँच विषय ही सेवत सेवत, दाग दगीली कीनी॥
जतन सों ओढो जी चादर झींनी।
तार तार भई जात अनारी, मोह ग्रँथि कस दीनी॥
जतन सों ओढो जी चादर झींनी।
फट न जाय तृष्णा मतबांधो,दुस्तर है फिर सीनी॥
जतन सों ओढो जी चादर झींनी।
निर्भय निर्भय जतन यहीहै, हरदम रहो लौलीनी॥
जतन सों ओढो जी चादर झींनी।

॥ पद ॥

गुरु पैयां लागूँ तारक नाम बता।
चिदानँद निर्मल निराधारा, अबिनासी निर्गुण निरा-
कारा। अचल अखँड अनँत अपारा, पूरण अर्थ लगा

गुरु पैयां लागूँ तारक नाम बता ।
आपही आप नाम धुन गाजे, बजे मनोहर अनहद
बाजे । द्वैत भ्रम मूळ सों भाजे, चेतन शब्द जगा ॥
गुरू पैयां लागूँ तारक नाम बता ।
सँसारी माया नहीं भासे, सकल द्वँद अनुभव सों
नासे । चहूँ ओर अक्षर प्रकासे, रूप अरूप बना ॥
गुरू पैयां लागूँ तारक नाम बता ।
शब्द ही शब्द अमरपुर जाऊँ, शब्द ही में पुन आप
समाऊँ । समरस शब्द ब्रह्म होजाऊँ, निर्भय पद दरसा ॥
गुरू पैयां लागूँ तारक नाम बता ।

॥ होरी ॥

सबी शृँगार सखी का, जतन बिन लागत फीका ।
नाम रूप आरोपित सत्ता, है सँकल्प हरी का,
आपही दीन आपही दुनियां, करता दीन दुनीका !
मूळ यही मंत्र श्रुती का ॥
ब। सबी शृँगार सखी का, जतन बिन लागत फीका ।
जो लाई डाई विल नाट माई, हैयही कौल मसीका,

सुभा जोशी